तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 11, अंक - 2-3, जनवरी-फरवरी 2023 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

सुविधा से महरूम अब, नहीं रहे हैं बाल
हाथ थाम 'बुनियाद' का, चलें शान की चाल

हुआ चयन 'बुनियाद' में, समझो बेड़ा पार

खूब पढ़ाई कीजिए, और दीजिए ध्यान ।
नहीं ग़रीबी राह में, बाधा अब श्रीमान ।1।

कृष्ण-सुदामा को दिया, अवसर एक समान ।
हाथ थाम 'बुनियाद' का, पा लो सारे ज्ञान ।2।

हरियाणा ने कर दिया, बड़ा गज़ब ऐलान ।
हमने दी बुनियाद से, बनिए आप महान ।3।

अवसर पा सब हँस रहे, और ग़रीबी शाद ।
बाल-बालिका खुश हुए, पक्की तय बुनियाद ।4।

सूरज की ज्यूँ बाँटता, सबको धूप समान ।
मौका है 'बुनियाद' से, बनिए आप महान ।5।

मौका मिलता गर मुझे, मैं कुछ होता और ।
नहीं बहाना अब चले, बदला है यह दौर ।6।

सुविधा से महरूम अब, नहीं रहे हैं बाल ।
हाथ थाम 'बुनियाद' का, चलें शान की चाल ।7।

सपने तेरे देखती, हरियाणा सरकार ।
हुआ चयन 'बुनियाद' में, समझो बेड़ा पार ।8।

- श्रीभगवान बव्वा
प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, लुखी
रेवाड़ी, हरियाणा

शिक्षा सारथी

तमसो मा ज्योतिर्गमय

जनवरी-फरवरी 2023

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
स्कूल शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ.अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

सतपाल शर्मा
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक**: 150 रुपये

Published & Printed by Sunita Devi on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"किसी ने घड़े से पूछा- तुम इतने ठंडे क्यों रहते हो ? घड़े ने कहा- जिसका अतीत भी मिट्टी, भविष्य भी मिट्टी, उसे किस बात की गर्मी होगी ?"

» सुपर-100 कार्यक्रम नहीं, एक क्रांति 5
» कैसे बन सकते हैं 'सुपर-100' का हिस्सा? 14
» क्या है मिशन बुनियाद ? 20
» मिशन बुनियादः प्रबंधन टीम, कार्य प्रणाली एवं प्रक्रिया 26
» 'मिशन बुनियाद' ने आँखों में भर दिये इन्द्रधनुषी सपने 30
» माता-पिता होते हैं प्रथम गुरु 31
» 'Mathsticks' A monthly Maths Letter for teachers.. 32
» Puppy's Kisses 33
» Our own Heart- Warehouse of Peace & Happiness 34
» Waves The Sea Hymn 35
» Socio-Emotional Learning.. 36
» Ethics and Values 38
» Soldier's Heart 40
» Courses After +2 44
» Amazing Facts 48
» General Knowledge Quiz 49

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

शैक्षिक फलक पर चमकते सुपर-100 के सितारे

कहते हैं कि अगर किसी कार्य को सच्चे मन और समर्पित भाव से किया जाए तो उसमें सफलता अवश्य प्राप्त होती है। प्रदेश के सुपर-100 कार्यक्रम के लिए यह बात शत-प्रतिशत सही होती मालूम पड़ती है। अपनी प्रतिभा के जौहर से सभी को अभिभूत करने वाले सुपर-100 के सितारों ने दिखा दिया है कि अगर उचित अवसर मिले तो साधारण सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले विद्यार्थी भी अपनी तीक्ष्ण मेधा से चमत्कृत करने वाले परिणाम दे सकते हैं। इस कार्यक्रम की सफलता के पीछे सरकार की इच्छा व संकल्प-शक्ति, विभाग के प्रशासनिक अधिकारियों का कुशल मार्गदर्शन व प्रोत्साहन, विकल्प फाउंडेशन का समर्पण भाव व मेधावी विद्यार्थियों की सच्ची साधना रही है।

इस महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम की सफलता की उम्मीद तो सभी को थी, परंतु जब परिणाम उम्मीद से भी बढ़ कर आयें तो मन और भी आह्लादित होता है। प्रदेश सरकार व शिक्षा विभाग ने इस कार्यक्रम की सफलता से आह्लादित होकर मिशन बुनियाद की ओर कदम बढ़ाए हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य नौवीं-दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों को विविध प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करके उनकी शैक्षिक नींव को सुदृढ़ता प्रदान करना है। आपकी चहेती पत्रिका शिक्षा सारथी का यह अंक सुपर-100 व मिशन बुनियाद पर केंद्रित है। आपकी प्रतिक्रियाओं की सदा की भाँति प्रतीक्षा रहेगी। नव वर्ष-2023 आप सभी के लिए शुभ हो, ऐसी हमारी ओर से मंगलकामनायें।

- संपादक

सुपर-100
कार्यक्रम नहीं, एक क्रांति

नवीन मिश्रा

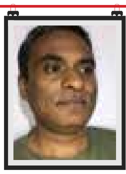

सुपर-100 प्रोग्राम की शुरुआत हरियाणा-सरकार के दृष्टिकोण से चाहे आर्थिक तौर पर कमजोर बच्चों को देश के अग्रिम इंजीनियरिंग और मेडिकल संस्थानों में दाखिला करवा कर उनके परिवार का उत्थान कर सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना रहा हो, परंतु इस प्रोग्राम को शुरू करने की मंशा विकल्प फाउंडेशन की कुछ और रही है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में चार प्रमुख समस्याएँ हैं -शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच लगातार कमज़ोर होता जा रहा पारस्परिक सम्बन्ध, शिक्षक और विद्यार्थी दोनों का शिक्षा-शिक्षण कार्य को उचित समय न देना, अन्य प्रोफेशन की तुलना में युवा पीढ़ी का शिक्षण के प्रति कम रुझान, समाज में सरकारी स्कूलों के प्रति हीनता का भाव।

सुपर-100 ए सीड फॉर द चेंज, को हरियाणा की ज़मीन पर वर्ष 2018 में उक्त सभी समस्याओं के समाधान के नजरिये से बोया गया। इस बीज ने दो साल ज़मीन के अन्दर रहकर इन चारों समस्याओं के पूर्णतः हल करने की क्षमता अपने में विकसित की।

क्रांतिकारी कार्यक्रम हैं- सुपर-100 और मिशन बुनियाद

बात वर्ष 2017 की है, मैं किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में था। इस कार्यक्रम में मुझे कुछ प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होनहारों को सम्मानित करना था। वेशभूषा से ये सभी बच्चे उच्च मध्यमवर्गीय परिवारों से लग रहे थे। मैं अपने सार्वजनिक जीवन में अन्त्योदय दर्शन से बहुत प्रभावित रहा हूँ, मेरा मानना है कि समाज का सर्वांगीण विकास तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि समग्र शिक्षा की पहुँच (विशेषकर तकनीकी एवं चिकित्सा शिक्षा) समाज के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति तक न हो।

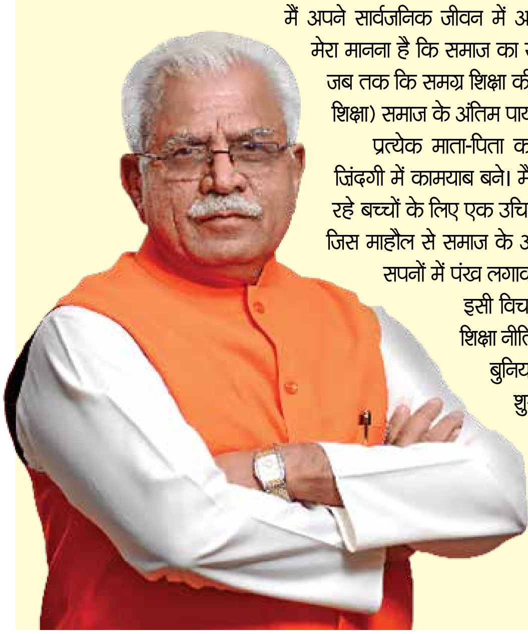

प्रत्येक माता-पिता का सपना यही होता है कि उनकी संतान जिंदगी में कामयाब बने। मैंने सोचा, क्यों न सरकारी विद्यालयों में पढ़ रहे बच्चों के लिए एक उचित अवसर और बेहतरीन माहौल दिया जाए, जिस माहौल से समाज के अंतिम पायदान पर बैठे हुए बच्चे भी अपने सपनों में पंख लगाकर अपरिमित आसमान में उड़ान भर सकें।

इसी विचार के साथ हरियाणा 'सुपर-100' और नई शिक्षा नीति-2020 के सफल क्रियान्वयन हेतु 'मिशन बुनियाद' जैसे शिक्षा में क्रांतिकारी कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन से ही भारत के पुनः विश्वगुरु बनने का मार्ग प्रशस्त होगा।

मनोहरलाल
मुख्यमंत्री हरियाणा

सरकारी स्कूलों में समाज का विश्वास पुनःस्थापित करने के लिए 100 बच्चों का चयन सरकारी स्कूलों से इस उद्देश्य के साथ किया गया कि सरकारी स्कूल के बच्चे किसी से कम नहीं। शिक्षा व्यवस्था में बुनियादी तौर पर बदलाव लाने के इच्छुक युवा प्रोफेशनल इंजीनियर और डॉक्टरों को शिक्षण की जिम्मेदारी सौंपी गयी। बच्चों का ध्यान किसी बुरी आदत में न चला जाए, इसलिए बच्चों को अपने घरों से निकाल कर डाइट रेवाड़ी के हॉस्टल में रखा गया । 24 घंटे बच्चों की प्रत्येक गतिविधि पर नज़र बनाए रखने के लिए और बच्चों की इस यात्रा में कदम से कदम मिलाकर चलने वाले निष्ठावान प्रोग्राम पर्यवेक्षकों को नियुक्त किया गया। इस दौरान हॉस्टल में बच्चों को मोबाइल और अन्य सभी ध्यान भटकाने वाले गैजेट्स से दूर रखा गया, यहाँ तक कि बच्चों को अपने परिवार से भी बातचीत के लिए सप्ताह में एक बार कुछ मिनट ही निर्धारित किये गए।

शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच अच्छे सम्बन्ध बनें, यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी विकल्प फाउंडेशन ने ली। इन सभी चारों समस्याओं को हल करने की क्षमता विकसित करने के बाद दिनांक 1 अगस्त, 2018 को तत्कालीन निदेशक मौलिक शिक्षा श्री राजनारायण कौशिक के कर-कमलों द्वारा सुपर-100 के इस बीज को डाइट प्रांगण रेवाड़ी में बोया गया।

सुपर-100 की आरंभ के 2 वर्षो की यात्रा बहुत उतार-चढ़ाव वाली रही। जब 11वीं में पढ़ रहे बच्चों के लिए सरकार द्वारा सुपर-100 प्रवेश परीक्षा का विज्ञापन समाचार-पत्रों में आया तो कुछ लोगों ने इसे जरूर सराहा, लेकिन ज्यादातर लोगों ने इसे न सिर्फ नकारात्मक नज़रिये से लिया बल्कि कुछ लोगों ने तो बच्चों को इसमें पंजीकरण कराने से भी रोका। ऐसे लोगों ने कुछ अन्य भ्रांतियाँ भी फैलाईं।

सुपर-100 को आरंभ कर जहाँ सरकार अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रही थी, वहीं अनेक

वाकिफ कहाँ ज़माना हमारी उड़ान से
वे और थे जो हार गए आसमान से

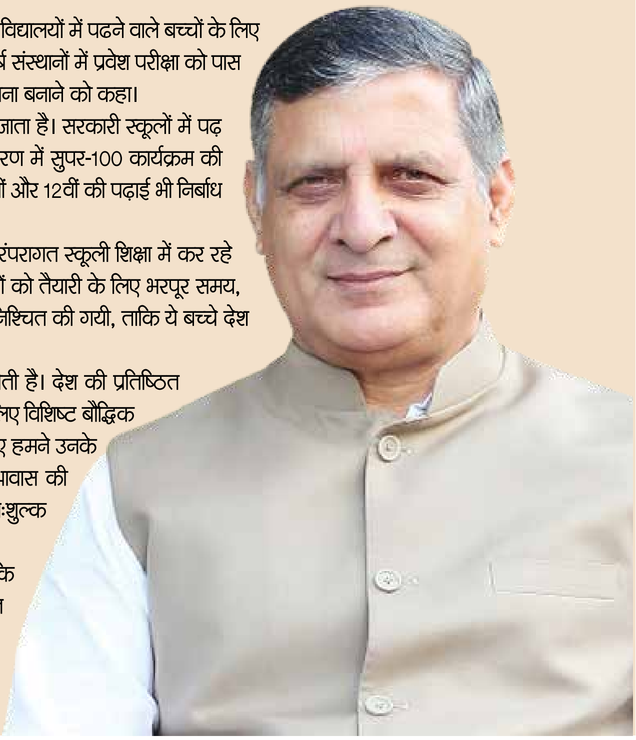

बात जनवरी 2018 की है, एक चर्चा के दौरान मुख्यमंत्री जी ने बताया कि सरकारी विद्यालयों में पढने वाले बच्चों के लिए एक ऐसा कार्यक्रम तैयार किया जाए, जिसके तहत सरकारी स्कूलों के बच्चे देश के शीर्ष संस्थानों में प्रवेश परीक्षा को पास कर प्रवेश ले सकें। मैंने विभाग के उच्च अधिकारियों से बैठक में ऐसी कुछ सटीक योजना बनाने को कहा।

हमारे समाज में इंजीनियर और डॉक्टर को बहुत सम्मानजनक नजरिये से देखा जाता है। सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे विरले बच्चे ही इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो पाते हैं। हमने निर्णय लिया कि पहले चरण में सुपर-100 कार्यक्रम की शुरुआत की जाये, जिसके तहत इंजीनियरिंग और मेडिकल की तैयारी के साथ-साथ 11वीं और 12वीं की पढ़ाई भी निर्बाध जारी रह सके।

यह चुनौती बहुत कठिन थी, क्योंकि हम पहली बार इस तरह का कोई प्रयोग परंपरागत स्कूली शिक्षा में कर रहे थे। डगर कठिन थी, मगर हमने उत्साह से चलना आरंभ किया। इस कार्यक्रम में बच्चों को तैयारी के लिए भरपूर समय, अत्याधुनिक सुविधाएँ और रात-दिन भावनात्मक सपोर्ट के साथ-साथ सतत निगरानी सुनिश्चित की गयी, ताकि ये बच्चे देश के अन्य बच्चों से प्रतिस्पर्धा कर सकें।

सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की आर्थिक पृष्ठभूमि औसत स्तर की होती है। देश की प्रतिष्ठित प्रवेश परीक्षाओं में शुमार इंजीनियरिंग और मेडिकल की प्रवेश परीक्षा में सफल होने के लिए विशिष्ट बौद्धिक स्तर के साथ उचित मार्गदर्शन चाहिए होता है। बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए हमने उनके परिवार पर अतिरिक्त आर्थिक जिम्मेदारी डाले बगैर बच्चों के पौष्टिक भोजन और आवास की जिम्मेदारी भी अपने ऊपर ले ली। अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस आवासीय एवं पूर्णतः निःशुल्क कार्यक्रम बच्चों के लिए बनाया।

आज जब हम सुपर-100 कार्यक्रम को 5 साल पीछे जाकर देखते हैं तो लगता है कि हमने प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को बदलने के लिए एक उत्कृष्ट कार्यक्रम की शुरुआत की थी, जिसके अप्रत्याशित परिणाम आज हम सबके सामने हैं।

कँवर पाल
स्कूल शिक्षा मंत्री, हरियाणा

प्रतिभाओं को तलाशने और तराशने का दूसरा नाम हैः सुपर-100

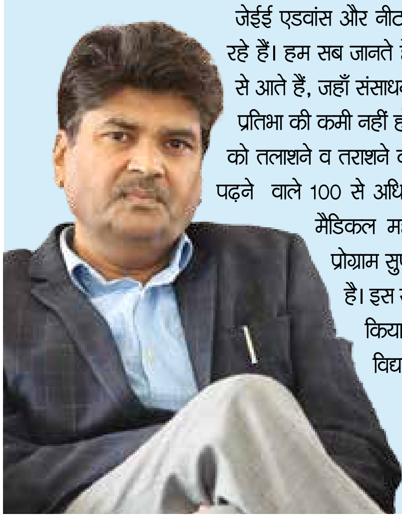

जेईई एडवांस और नीट परीक्षा में सुपर-100 के विद्यार्थी कमाल का प्रदर्शन कर रहे हैं। हम सब जानते हैं कि सरकारी विद्यालयों में आने वाले विद्यार्थी उस परिवेश से आते हैं, जहाँ संसाधनों की कमी होती है, लेकिन यह बात भी सच है कि उनमें प्रतिभा की कमी नहीं होती। सुपर-100 कार्यक्रम के तहत हम ऐसी ही प्रतिभाओं को तलाशने व तराशने का काम कर रहे हैं। पिछले 4 वर्षों में सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले 100 से अधिक विद्यार्थियों को आईआईटी, एनआईटी, एम्स, राजकीय मैडिकल महाविद्यालयों में दाखिला दिलवाकर हरियाणा-सरकार के प्रोग्राम सुपर-100 ने हरियाणा की शिक्षा प्रणाली में अमिट छाप छोड़ी है। इस सफलता से प्रभावित होकर अब मिशन बुनियाद प्रोग्राम शुरू किया गया है। सरकार द्वारा 9 वीं कक्षा के 1,00,000 से अधिक विद्यार्थियों के रजिस्ट्रेशन का लक्ष्य रखा है।

डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

अभिभावक यह सोच रहे थे कि एक ही बच्चा है, छोटा बच्चा है, कभी घर से बाहर नहीं निकला, पढ़ाई तो घर पर भी हो जायेगी इत्यादि। बच्चों का भी अपने परिवार, गाँव से भावनात्मक लगाव होता है, इस कारण वे भी घर की सुख-सुविधाओं को छोड़ कर रेवाड़ी सुपर-100 में आने को तैयार नहीं थे। शिक्षक जिनका अपने-अपने स्कूल के बच्चों के साथ जुड़ाव था, उन बच्चों को अपने स्कूल से अलग जाते नहीं देखना चाहते थे, लेकिन 150 चयनित बच्चों में से 125 बच्चों ने इन सभी मुश्किलों से निकलते हुए पूरे नहीं तो आधे ही मन से सही, सुपर-100 प्रोग्राम को ज्वाइन किया।

मैं यहाँ पर बच्चों के शुरुआती 10 दिनों की दिनचर्या का जिक्र जरूर करना चाहूँगा। अगस्त महीने के गर्मियों के दिन, बच्चों के लिए बंक बैड जिसमें नीचे वाले बच्चों को छत के पंखे से हवा का न आना, नए तरह का खानपान, अपने परिवार एवं रिश्तेदारों से दूरियाँ होने से मन में उदासी, मोबाइल फ़ोन का सिर्फ सप्ताह में एक बार अधिकतम दो मिनट के लिए इस्तेमाल, भला इन हालातों में बच्चों का मन कैसे लगता।

इन सब समस्याओं के बीच दो अच्छी बातें भी थीं। पहला शाम को 1:30 घंटा शिक्षकों के द्वारा बच्चों से बात करना, जिससे बच्चों का सुपर-100 प्रोग्राम से जुड़ाव शुरू हुआ और दूसरा 125 बच्चों का एक साथ उठना-बैठना, दिल की बातें करना, घर से दूर एक और परिवार बन जाना। ये दो बातें अवश्य सुकून देने वाली रहीं।

बच्चों का मन तो घर से दूर जाकर उदास होता ही है, उनके अभिभावकों का भी कहना था कि बच्चों की माँ को बच्चों की याद सता रही है। उन्हीं दिनों रक्षा-बंधन का पर्व भी आने वाला था। एक विचार बना कि बच्चों को इस अवसर पर 5 दिन की छुट्टी दे दी जाये। त्योहार की छुट्टियों के बाद जब बच्चे वापस आयेंगे तो वह और

शिद्दत से पढ़ाई करेंगे। हमें यह भी लग रहा था कि अगर बच्चों को छुट्टियाँ कीं, तो कुछ बच्चे वापस कैम्पस नहीं आना चाहेंगे। काफी विचार-विमर्श के बाद हमने बच्चों के आने के 10 दिनों बाद ही 11 अगस्त, 2018 को 4 दिन की छुट्टियाँ घोषित कर दी।

हम बहुत चिंतित थे, क्योंकि हमें आशंका थी कि शायद 50 बच्चे भी हॉस्टल वापस न आयें। लेकिन छुट्टी के बाद 16 तारीख को 113 बच्चे कैम्पस में वापस आये। घर से लौटने के बाद बच्चे भी खुश थे और हम भी, क्योंकि बच्चे तो हमारे अनुमान से ज्यादा ही कैम्पस में वापस आये थे।

अपेक्षाकृत अधिक जुनूनी और मेहनती होते हैं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी-

17 जुलाई, 2018 से हमने 113 बच्चों के साथ जब अध्यापन आरंभ किया तो हमें और बच्चों को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। हमने पाया कि जो मानसिक और बौद्धिक स्तर आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश के लिए बच्चों में होना चहिये था, वैसा उनका नहीं था। बच्चे अंग्रेज़ी माध्यम की समस्या से जूझ रहे थे। दसवीं कक्षा तक उनमें से अधिकतर का हिंदी माध्यम था। ।

बच्चों की हालत देखकर हमें भी लगने लगा था शायद यह योजना सफलता की सीढ़ी को छूने से पहले ही दम न तोड़ दे और इसको शुरुआत करने का फैसला गलत साबित न हो, लेकिन बच्चों की ईमानदारी से जी-तोड़ मेहनत करने की लगन व ललक ने हमारी उम्मीदों के चिराग को बुझने नहीं दिया।

बच्चों के दैनिक कार्यक्रम में सुबह 8:30 बजे से शुरू होकर रात 10:30 बजे तक कुछ न कुछ गतिविधियाँ निर्बाध चलती रहती थीं। इनमें विभिन्न लेक्चर, डाउट क्लास, मोटिवेशन क्लासेज के साथ-साथ कुछ गैर शैक्षणिक गतिविधियाँ भी शामिल रहती थीं।

उस समय तक बच्चों के पास बैठने के लिए बेंच की सुविधा नहीं थी। वे 12 घंटे जमीन पर बैठकर अभ्यास करते रहते थे। अक्टूबर महीने के आते-आते बच्चों में अधिक आत्मविश्वास देखा गया। अब वे रुचिपूर्वक अध्ययन करने लगे थे।

जिस प्रांगण में सुपर-100 प्रोग्राम चल रहा था, बच्चों के शुरूआती दिनों में वहाँ के मैनेजमेंट को कोई समस्या नहीं थी, लेकिन धीरे- धीरे कुछ समस्याएँ दिखने लगीं। बच्चे भी शिकायतें करने लगे थे कि उनको लक्ष्य से भटकाने की कोशिश की जा रही है। तब तक दीपावली नज़दीक आ गई थी। हॉस्टल प्रबंधन द्वारा हमें बताया गया कि बच्चे यहाँ की पढाई से खुश नहीं हैं और ज्यादातर बच्चे दीवाली की छुट्टी के बाद वापस नहीं आयेंगे। हम भी चिंतित हो गए कि शायद हमारा बच्चों को देखने का नज़रिया गलत हो।

दीवाली की छुट्टियों के बाद 113 में से 113 बच्चे कैम्पस में लौट आए तो हमारी आशंका निर्मूल साबित हुई। जब हमने बच्चों से पूछा कि यह कैसे संभव हुआ, तब बच्चों ने बताया कि अब हमें अपना भला-बुरा खुद समझ आने लगा है। अब हम दूसरों की नहीं, अपने मन की सुनते हैं। बच्चों ने बताया कि उनको कुछ लोगों ने ऐसा भी कहा था कि तुम लोग वापस जाकर अपने कैरियर के साथ खिलवाड़ करोगे। बच्चों से यह जबाब सुनकर हम बहुत हतप्रभ रह गए। बच्चों के जबाब ने हमारे आत्मविश्वास को और मजबूत बना दिया। हमें पूर्ण विश्वास हो गया कि हमारा प्रोजेक्ट सही दिशा में आगे बढ़ रहा है।

हमने जहाँ अपने आप को पढ़ने-लिखने की दिशा में और जोर लगा कर बच्चों को प्रेरित किया, वहीं बच्चों के हॉस्टल मैनेजमेंट से रिश्ते खराब होने लगे। 11वीं क्लास के फाइनल पेपर के बाद अप्रैल 2019 में जब पीटीएम आयोजित हुई तो हम इस बात से रूबरू हुए। जब उन लोगों को लगा कि बच्चे उनकी बात नहीं मान रहे हैं, तब

पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है

सुपर-100 कार्यक्रम साधारण परिवारों के मेधावी विद्यार्थियों के जीवन में नया उजाला लेकर आया है। इस कार्यक्रम में सफल रहे अनेक बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा कि वे भी आईआईटी या अन्य प्रतिष्ठित संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर पा सकते हैं। इन विद्यार्थियों ने सच में दिखा दिया है कि राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में प्रतिभा की कमी नहीं है। अगर उन्हें उचित अवसर मिले तो वे भी किसी से कम नहीं है।

अब हम मिशन बुनियाद की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। मॉडर्न क्लासरूम और टेक्नोलॉजी की मदद से मिशन बुनियाद प्रोग्राम, सुपर-100 प्रोग्राम के लिए एक जरूरी आधार साबित हो रहा है। मिशन बुनियाद प्रोग्राम के सफल क्रियान्वयन से 2026 में सुपर-100 प्रोग्राम के 400 में से 400 विद्यार्थियों को सफल बनाए जाने का लक्ष्य रखा गया है।

डॉ. अंशज सिंह
निदेशक माध्यमिक शिक्षा, मौलिक शिक्षा व राज्य परियोजना निदेशक हरियाणा

सफलता की गाथा लिखते सुपर-100 के बच्चे

राज्यवासी सुपर-100 के शानदार परिणाम देख चुके हैं। उन्होंने देखा है कैसे पिछड़े क्षेत्र से आए हुए बच्चे इस कार्यक्रम से जुड़ कर जीवन में बहुत आगे बढ़ गए हैं और आज अच्छे मुकाम पर अपनी सफलता का झण्डा लहरा चुके हैं। जीवन की बाधाओं को दूर कर अँधेरों से जूझ कर जीवन को रोशन कर पाए है, खुद अपने सपनों की उड़ान भरने की नई कहानी लिख पाए हैं। सुपर-100 ने लोगों को भरोसा दिलाया है कि सपने देखने के लिए बहुत पैसा होना जरूरी नहीं है, चाहिए बस काबलियत और लगन। इसलिए नए कार्यक्रम मिशन बुनियाद के लिए भी सभी विद्यार्थी, अभिभावक तथा राज्य बहुत ही उत्सुक नज़र आ रहे हैं। बच्चों एवं उनके अभिभावकों की उत्सुकता और विश्वास ही मिशन बुनियाद कार्यक्रम की नींव है। यह एक बड़े स्तर पर शुरू किया गया ऐसा कार्यक्रम है जिसमें ज्यादा से ज्यादा बच्चों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की भव्यता ही विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के उत्साह को स्पष्ट कर रही है। उन सभी की आँखों में एक बेहतरीन कल की नई आस देखी गई है। यह दर्शाता है इस कार्यक्रम के प्रति लोगों के मन में जागे उस विश्वास को, उस आशा की किरण को जो यह निश्चित रूप से उनके उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत कर रही है।

संध्या छिकारा
जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी, पंचकूला

उन्होंने पीटीएम में आए अभिभावकों से भी नकारात्मक टिप्पणियाँ कीं। पीटीएम के बाद सभी अभिभावक मुझसे व्यक्तिगत तौर पर मिले और बोले कि सर, सरकार से कहकर बच्चों को आप यहाँ से निकालकर विकल्प फाउंडेशन के सेंटर पर पढ़ाएँ, वरना बच्चे इस नकारात्मक माहौल में फँसे रहेंगे। हमने डीएसई साहब को वस्तुस्थिति से अवगत कराया और 11 मई, 2019 से बच्चों का क्लासरूम डाइट परिसर से बदलकर विकल्प फाउंडेशन कर दिया गया। जबकि बच्चों का हॉस्टल पूर्ववत् डाइट परिसर में ही रहा।

अब बच्चों का हॉस्टल और विकल्प परिसर स्थित क्लासरूम की दूरी 11 किलोमीटर हो गयी थी। सरकार द्वारा इस समस्या का संज्ञान लिया गया। इन बच्चों को आवागमन के लिए 2 बसें लगवा दी गयीं। अब बच्चे सुबह 9 बजे आते और शाम 6 बजे अपने हॉस्टल वापस लौट जाया करते थे।

यह बात सच है कि विकल्प फाउंडेशन में पढ़ने के लिए सिर्फ क्लासरूम की सुविधा थी, अन्य सुविधाएँ डायट की तुलना में बहुत अच्छी नहीं थीं। बच्चों के लिए खाना तो डाइट के हॉस्टल से ही आता था। विकल्प फाउंडेशन के क्लासरूम हवादार न होने की वजह से वहाँ उमस बहुत ज्यादा हो जाती थी। इन सब परिस्थितियों में भी

बच्चों की पढ़ाई दोगुनी रफ़्तार से जारी रखी गई। सभी बच्चे और अभिभावक खुश थे। अब बच्चे यह चाहने लगे थे कि उनका हॉस्टल भी विकल्प फाउंडेशन परिसर के नज़दीक ही कर दिया जाये ताकि उनके आने-जाने का दो घंटे का समय प्रतिदिन बच सके।

सुपर-100 प्रोग्राम की वस्तुस्थिति जानने के लिए तत्कालीन महानिदेशक स्कूली शिक्षा श्री राकेश गुप्ता जी ने एक वीडियो कांफ्रेंस द्वारा बच्चों से सीधा संवाद स्थापित किया। मैं भी उस वर्चुअल मीटिंग में उपस्थित था। बच्चों ने सब कुछ प्रोग्राम के बारे में अच्छा ही बताया था। तभी उन्होंने प्रोगाम की गुणवत्ता को और सुधारने के लिए सुझाव माँगे। बच्चों ने कहा कि यदि हमें डाइट परिसर के हॉस्टल से विकल्प फाउंडेशन के पास किसी हॉस्टल में शिफ्ट कर दिया जाए तो उनके लिए अच्छा रहेगा। माननीय महानिदेशक महोदय ने इस सुझाव को तत्काल लागू करते हुए विकल्प फाउंडेशन के प्रतिनिधि को विभाग में बुलाकर बच्चों की आवासीय व्यवस्था अपने कैम्पस में करने के लिए निर्देश दिए।

11 सितम्बर, 2019 को सभी 102 बच्चे डायट हॉस्टल से विकल्प फाउंडेशन द्वारा प्रबंधित कैम्पस में ट्रांसफर हो गए। बच्चों को विकल्प फाउंडेशन के परिसर में ट्रांसफर करने की योजना सुपर-100 की यात्रा में मील का पत्थर साबित हुई। आज जो भी सुपर-100 प्रोग्राम है उसमें सरकार के इस फैसले का बहुत बड़ा योगदान है। सुपर-100 प्रोग्राम हमेशा श्री राकेश गुप्ता जी को उनके इस दूरदर्शी निर्णय के लिए याद रखेगा।

मैं यहाँ पर एक और घटना का जिक्र करना नहीं भूलूँगा जब बच्चे पूर्णतः विकल्प फाउंडेशन के परिसर में शिफ्ट हो गए थे। उनकी पढाई-लिखाई और खानपान की व्यवस्था सुचारु रूप से चल रही थी। अब अभिभावक भी खुश नजर आ रहे थे। तब भी कुछ नकारात्मक लोगों ने रेवाड़ी के नवनियुक्त जिला उपायुक्त श्री यशेन्द्र सिंह जी को शिकायत करते हुए कहा कि बच्चों का नया माहौल पढ़ाई के लिए उपयुक्त नहीं है, क्लासरूम में बहुत गर्मी रहती है, बच्चों को पुनः डाइट में बुला लिया जाए। उपायुक्त महोदय ने शिकायत का संज्ञान लेते हुए सुपर-100 परिसर में औचक निरीक्षण किया, क्लासरूम में जाकर देखा तो शिकायत को बिल्कुल सही पाया, क्लासरूम में सिर्फ छत वाले पंखे ही उपलब्ध थे। सभी शिक्षक और बच्चे पसीने में भीगे थे। उन्होंने बच्चों से पूछा कि क्या उन्हें गर्मी नहीं लग रही है? बच्चों ने एक स्वर में कहा कि सर कुछ बड़ा पाने के लिए छोटी-मोटी सुविधाओं को तो छोड़ना ही पड़ता है। डीसी सर बच्चों की इस बात से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने और भी कई सवाल बच्चों से पूछे। क्लासरूम में गर्मी की समस्या का समाधान करने के लिए डीसी सर ने क्लासरूम में एसी लगवाने के आदेश दिए और बच्चों को उनके आगामी भविष्य के लिए शुभकामनायें भी दीं।

डीसी सर के इस औचक निरीक्षण ने हम सभी में नई ऊर्जा का संचार किया। हमने इस विजिट से प्रेरित होकर और ज्यादा मेहनत करनी शुरू की। हमारी तैयारी बहुत अच्छी चल रही थी और हम लक्ष्य की ओर शनैः शनैः कदम बढ़ा रहे थे।

हमें पूरा विश्वास था कि जेईई-मेन्स-2020 की

परीक्षा में बच्चे अच्छा प्रदर्शन करेंगे, लेकिन शिक्षा विभाग तक ऐसी खबरें जाने लगीं कि जब से बच्चे विकल्प फाउंडेशन परिसर में ट्रांसफर हुए हैं, तभी से उनकी तैयारी ठीक नहीं चल रही है। विभाग ने बच्चों की तैयारी की ज़मीनी हकीकत जानने के लिए बच्चों के लिए जेईई-मेन्स पैटर्न पर एक टेस्ट का आयोजन करवाया। उस टेस्ट में बच्चों का प्रदर्शन बहुत शानदार रहा और सरकार व विभाग का विश्वास इस प्रोग्राम संचालन में और बढ़ गया। जनवरी, 2020 के अंतिम सप्ताह में आयोजित जेईई-मेन्स परीक्षा में कुल 47 नॉन मेडिकल वर्ग के छात्रों ने भाग लिया और 45 बच्चों ने इसमें सफलता हासिल की और तो और काजल (फतेहाबाद) और सिमरन (रोहतक) ने 99 पर्सेंटाइल हासिल कर प्रोग्राम में एक नई जान फूँक दी।

फ़रवरी 2020 में जेईई-मेन्स का परिणाम आते ही तत्कालीन उपायुक्त श्री यशेन्द्र सिंह, आईएएस द्वारा लघु सचिवालय रेवाड़ी सभागार में बच्चों के लिए एक मोटिवेशनल सेमीनार आयोजित कर बच्चों को उनकी सफलता के लिए बधाई दी और आगामी परीक्षाओं जेईई-एडवांस और नीट के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

जेईई-मेन्स का परिणाम देकर हमने आधी दूरी तय कर ली थी और आधी दूरी मई 2020 में होने वालीं जेईई-एडवांस और नीट का परिणाम देकर तय करनी बाकी थी।

आईआईटी और मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए आगे की परीक्षाओं की तैयारी के लिए हमने जी-तोड़ मेहनत करनी शुरू कर दी। सब कुछ अच्छा चल रहा था। बच्चे, अभिभावक, विकल्प-फाउंडेशन और सरकार सब आत्मविश्वास से भरपूर थे, लेकिन अचानक 21 मार्च, 2020 को पूरे देश में कोरोना संक्रमण की वजह से लॉकडाउन लगने की खबर आ गयी। हमें कुछ समझ नहीं आया। एक बार तो ऐसा लगा कि सरकारी स्कूलों के बच्चों से कुछ बड़ा कर दिखाने का सपना टूट जाएगा, अब तक की सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा। हमें बच्चों से हॉस्टल खाली करवाने का आदेश आ गया था। हमने बच्चों से होस्टल खाली कराने में 5 दिन लगा दिए और सरकार से गुहार लगाते रहे कि अगर एक बार बच्चे घर चले गये तो इनका पढ़ाई का मोमेंटम टूट जायेगा और हमारे सूक्ष्म प्रयास पर पूर्ण विराम लग जाएगा। लेकिन अंत में हमें वैसा ही करना पड़ा जैसा पूरे देश के साथ हुआ।

जब सरकार जनता का हौसला बढ़ाने के लिए दीपक जलाने का आह्वान कर रही थी, तब हमें भी लगा कि किसी तरह से बच्चों का मार्गदर्शन ऑनलाइन माध्यम से किया जाए ताकि सुपर-100 कार्यक्रम का दीपक सतत प्रज्वलित रहे।

1अप्रैल, 2020 से हमने बच्चों का व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर उनसे 10 दिनों तक घर से पढाई करने का आह्वान किया। हम बच्चों को किताब की फोटो भेजकर कुछ प्रश्न भेजते और उनके डाउट का हल भी उसी ग्रुप में कर दिया करते। अचानक महामारी आने के कारण और लॉकडाउन लगने की वजह से हमारे पास डिजिटल उपकरणों की पहले से व्यवस्था नहीं थी, लेकिन मई महीने में श्री राजनारायण कौशिक, आईएएस द्वारा 1 डिजिटल बोर्ड और डिजिटल टैब का प्रबंध करवा दिया गया। श्री कौशिक जी ने सुपर-100 कार्यक्रम के शुरुआत में काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके इस कदम से हमारी उम्मीदें बढ़ गयीं और हमने ऑनलाइन क्लासें आरंभ कर दीं। कुल 100 बच्चों में से नॉन-मेडिकल के 40 और मेडिकल के 15 बच्चे इस डिजिटल क्लासरूम से जुड़ गए, लेकिन सुपर-100 में पढ़ रहे बच्चों की संख्या 100 से 55 रह गयी।

हमने इन 55 बच्चों के साथ अपनी मेहनत जारी रखी और टेलीफोन के माध्यम से प्रत्येक बच्चे को खुद भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक सपोर्ट देते रहे। कोरोना के कारण जेईई-एडवांस की परीक्षा आगे बढ़ते-बढ़ते सितम्बर, 2020 में आयोजित हुई। इस परीक्षा में कुल 37 बच्चों ने भाग किया और 21 बच्चों ने सफलता हासिल की।

बच्चों की सफलता से शिक्षा विभाग के साथ-साथ हरियाणा सरकार के लोग भी बहुत उत्साहित थे। इस ऐतिहासिक सफलता को देखकर माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा अपने आवास पर बच्चों का सम्मान समारोह

आयोजित किया गया। इस सम्मान समारोह के मंच से सुपर-100 प्रोग्राम ने अपना परिचय पूरे हरियाणा को दिया। सरकार ने भी इस सफलता को ऐतिहासिक करार दिया। यह गलत भी नहीं था, काजल मलिक, गाँव इन्दाचोई, जिला फतेहाबाद प्रदेश की पहली छात्रा थी जिसने सरकारी स्कूल से निकलकर आईआईटी बॉम्बे में कम्प्यूटर साइंस के बीटेक कोर्स में प्रवेश लिया था। पिछले 25 वर्षों से प्रदेश के सरकारी स्कूल का कोई बच्चा काजल को छोड़कर आईआईटी बॉम्बे में प्रवेश नहीं ले पाया था।

इस तरह से 1 अगस्त, 2018 को रेवाड़ी से शुरू हुई सुपर-100 की यात्रा का पहला पड़ाव 10 अक्टूबर, 2020 को मुख्यमंत्री आवास पर हुआ। इस यात्रा में बहुत से काँटे यानी कठिन चुनौतियाँ रहीं। लेकिन कहते हैं न, कि चुनौतीपूर्ण समस्याओं का सामना किये बगैर बड़ी सफलता भी हासिल नहीं की जा सकती। मैं ईश्वर का सदैव शुक्रगुजार रहूँगा कि उसने विकल्प फाउंडेशन को एक कठिन, चुनौतीपूर्ण और संघर्षपूर्ण मार्ग पर चलते हुए अंततः कामयाबी तक पहुँचाया। ।

आज जब प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में सुपर-100 प्रोग्राम की चर्चा हो रही है, समाज और सरकारी स्कूल के बच्चे सुपर-100 कार्यक्रम में अपने स्वर्णिम भविष्य को आशा की किरण के रूप में देख रहे हैं, यह सब कुछ उन प्रथम वर्ष के 100 बच्चों के संघर्ष और जी-तोड़ मेहनत का परिणाम है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि भारत वर्ष की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालयों के गौरवशाली इतिहास को समेटे विकल्प फाउंडेशन भारत के भविष्य की नींव में एक बीज साबित होगी।

संचालक
हरियाणा सुपर-100

अब आर्थिक अभाव नहीं बनेंगे बाधक

शिक्षा के क्षेत्र में नवीन क्रांति का यह सफर शुरू हुआ था 2018 में सुपर-100 के साथ, जब सरकार तथा विकल्प फाउंडेशन ने मिलकर इस कार्यक्रम रूपी नवांकुर को शुभेच्छा से सींचा था। आज यह कार्यक्रम एक विशाल वृक्ष बन चुका है, जिसकी छाया सरकारी विद्यालयों के प्रतिभावान बच्चों के सिर के ऊपर है और उनको अभाव की धूप से बचा रही है। जो बच्चे धन की कमी के कारण कोचिंग सेंटरों में नहीं जा पाते थे, उनको निःशुल्क पढ़ा कर एम्स-आईआईटी जैसे संस्थानों में दाखिल करवाया जाता है।

सुपर-100 की भाँति मिशन बुनियाद कार्यक्रम भी माननीय मुख्यमंत्री जी का एक ड्रीम प्रोजेक्ट है। इस कार्यक्रम के माध्यम से वे शिक्षा के क्षेत्र को और तीव्र गति से आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं। इस कार्यक्रम से बच्चे अपनी बुनियाद को और अधिक मज़बूत कर पायेंगे। वे अच्छी शिक्षा ग्रहण कर उच्च संस्थानों से जुड़ कर खुद की एक पहचान बना पाएँगे। यह शिक्षा के क्षेत्र में एक सकारात्मक बदलाव होगा। प्रगति और बदलाव एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, क्योंकि बदलाव के बिना प्रगति असंभव है और बदलाव तभी संभव है जब विद्यार्थी, उनके माता-पिता, शिक्षक, सरकार, समाज सब लोग एक सकारात्मक सोच एवं लगन के साथ इस कार्यक्रम से जुड़े रहेंगे और अपना अमूल्य योगदान देते रहेंगे।

नसीब सिंह
जिला शिक्षा अधिकारी, रेवाड़ी

कैसे बन सकते हैं 'सुपर-100' का हिस्सा?

प्रदीप सनसनवाल

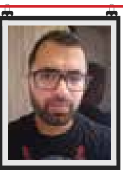

सुपर-100 प्रोग्राम में प्रवेश पाने का पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण चरण है- रजिस्ट्रेशन प्रोसेस। इस चरण में जिला स्तर पर अवेयरनेस कैंपेन चलाया जाता है, जिसमें डीएल, डीएसएस, डीएमएस और स्कूल प्रिंसिपल के साथ मिलकर सेमिनार आयोजित किए जाते हैं, प्रचार के लिए विद्यालयों में पोस्टर व बैनर लगाए जाते हैं। अवेयरनेस कैंपेन का मकसद विद्यार्थियों को इस कार्यक्रम की महत्ता बताना व इसमें प्रवेश की प्रक्रिया की जानकारी देना होता है।

रजिस्ट्रेशन के लिए दो अति विशेष मापदंड बनाए गए है। सरकारी स्कूल से दसवीं पास किया हुआ और विज्ञान विषय का विद्यार्थी ही सुपर हंड्रेड प्रोग्राम के लिए पंजीकरण कर सकता है। रजिस्ट्रेशन के लिए स्कूलों और विद्यार्थियों के साथ ऑनलाइन लिंक शेयर किया जाता है, जिसमें विद्यार्थियों को ध्यानपूर्वक अपनी सारी जानकारी भरनी होती है। उसके उपरांत एक प्रवेश-पत्र जारी होता है जो विद्यार्थी को अपने लेवल वन की परीक्षा-सेंटर पर अपने आधार-कार्ड के साथ लेकर आना होता है।

लेवल-1 परीक्षा-

हर वर्ष तकरीबन 10 से 15 हजार विद्यार्थी सुपर-100 की प्रवेश परीक्षा में भाग लेते हैं। विभाग द्वारा एक विशाल टीम बनाई जाती है, जिसका काम परीक्षा केंद्रों को चिह्नित करना और वहाँ पर शिक्षकों और विकल्प-फाउंडेशन की टीम की निगरानी में सफलतापूर्वक लेवल-1 परीक्षा करवाना होता हैं। पंजीकृत विद्यार्थी को अपने दिए गए परीक्षा-केंद्र पर समय पर पहुँचना होता

है। परीक्षा निरीक्षक की पूर्ण तफ्तीश के बाद विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने का मौका दिया जाता है। प्रश्न-पत्र में गणित, साइंस और मेंटल एबिलिटी विषय के 50 प्रश्न होते हैं। प्रत्येक सही उत्तर के 4 अंक दिये जाते हैं और गलत उत्तर का 1 अंक काटा जाता है। परीक्षा में उत्तर-पत्रिका ओएमआर शीट होती है, जिसमें सभी जानकारियाँ और उत्तर दिए गए गोले को भरकर दी जाती हैं। फिर लेवल एक परीक्षा का रिजल्ट दिए गए रजिस्ट्रेशन लिंक पर उपलब्ध कराया जाता है, जहाँ से विद्यार्थी अपने परीक्षा-परिणाम को देख सकते हैं।

लेवल-2 परीक्षा-

लेवल-1 में से 1200 विद्यार्थियों को लेवल-2 परीक्षा के लिए चुना जाता है और 300-300 के चार बैच में बाँट दिया जाता है। सभी बैच को 3 दिन के लिए रेवाड़ी स्थित विकल्प फाउंडेशन सेंटर पर आना होता है जहाँ पर उनके ठहरने और खाने-पीने की सभी व्यवस्था की जाती है। 3 दिनों तक उन सभी विद्यार्थियों को पढ़ाया और प्रोग्राम के बारे में सभी जानकारियाँ मुहैया कराई जाती हैं। तीसरे और आखिरी दिन उन सभी विद्यार्थियों की पढ़ाए गए विषयों पर एक परीक्षा होती है और उसके आधार पर सुपर-100 प्रोग्राम के 600 बच्चों को चुना जाता है, 400 सिलेक्टेड और 200 वेटिंग में। इस प्रकार से हरियाणा को अपने सुपर-100 बैच के होनहार विद्यार्थी हासिल होते हैं।

मौजूदा सत्र के लिए सुपर-100 कार्यक्रम की समय-रेखाः

जागरूकता अभियान -	22 दिसंबर 2022- 30 जनवरी 2023
रजिस्ट्रेशन -	16- 31 जनवरी, 2023
लेवल-1 परीक्षा-	10 फरवरी, 2023
लेवल-1 का रिजल्ट-	28 फरवरी, 2023
लेवल-2 परीक्षा-	10 अप्रैल, 2023- 20 अप्रैल, 2023
लेवल-2 रिजल्ट -	25 अप्रैल, 2023
कक्षाएं प्रारंभ -	3 मई, 2023

एडमिशन-

यह अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण चरण है। इस चरण में विद्यार्थी यह फैसला करता है कि वह एक नए प्रकार की शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनने के लिए तैयार है या नहीं। एडमिशन के दौरान विद्यार्थी को एक फॉर्म भरना होता है। साथ में अपनी फोटो, अपना आधार कार्ड, अपना जाति प्रमाण-पत्र, अपनी पिछली कक्षा की अंक-तालिका और एसएलसी जमा करानी होती है। सुपर-100 एक आवासीय प्रोग्राम है और यहाँ पर लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग छात्रावास बनाए हुए हैं। छात्रावास में आने से पहले विद्यार्थियों को कुछ जरूरी सामान लाने होते हैं, जैसे- नहाने के लिए बाल्टी, मग, तेल, कंघी, टूथब्रश, टूथपेस्ट, तकिया, चादर इत्यादि। एडमिशन के उपरांत विद्यार्थियों के छात्र जीवन का एक नया अध्याय शुरू हो जाता है।

सुपर हंड्रेड प्रोग्राम-

प्रोग्राम की सबसे बड़ी विशेषता है- विद्यार्थियों की विविधता वाली पृष्ठभूमि। हरियाणा के अलग-अलग जिलों से विद्यार्थी इस प्रोग्राम का हिस्सा बनते हैं और सब साथ में मिलकर एक नया शैक्षिक सफ़र शुरू करते हैं। जैसे किसी भी नए सफर की शुरुआत में कठिनाइयाँ आती हैं, वैसे ही इस प्रोग्राम में भी विद्यार्थियों को अलग-अलग प्रकार की कठिनाइयों से जूझना पड़ता है। पहली बार घर को छोड़कर किसी नई जगह आकर रहना, परिवार व माता-पिता की याद आना, घर की सुख-सुविधाओं की कमी महसूस करना, छात्रावास का खाना घर जैसा न लगना अवश्य ही उनके मन को उचाट करता है, मगर धीरे-धीरे अपने साथियों को ही अपना परिवार मान लेना, अपने अध्यापकों को अपना माता-पिता मान लेना और पेट की भूख को एक नए तरीके की शिक्षा के ज्ञान से भर लेना इन शुरूआती कठिनाइयों को भुला देता है। जल्दी ही विद्यार्थी खुद को इतना मज़बूत कर लेते हैं कि फिर वापस जाने के ख्याल को कभी मुड़कर नहीं देखते। फिर ये सभी विद्यार्थी आम से खास और खास से सुपर-100 के सितारे बन जाते हैं।

उन्हें गुमाँ है कि मेरी उड़ान कुछ कम है
मुझे यकीं है कि ये आसमान कुछ कम है

मेरा नाम भावना है। हम फतेहाबाद के छोटे से गाँव बनमंडोरी से संबंध रखते हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। पिता जी टैक्सी चलाते हैं तो हर रोज़ कुआँ खोद कर ही पानी पीना पड़ता है। सपने कोई भी देख सकता है, पर यह सच है कि गरीबी बहुत बड़े सपने देखने नहीं देती। आज मैं सोचती हूँ कि मेरी गरीबी ही मेरे लिए वरदान बनी है। अगर मैं भी किसी बड़े निजी विद्यालय में पढ़ रही होती तो सुपर-100 कार्यक्रम का हिस्सा कैसे बनती?

एक दिन मुझे सुपर-100 कार्यक्रम के बारे में पता चला। मुझे स्वयं पर यकीन नहीं था कि मैं इसकी परीक्षा उत्तीर्ण कर पाऊँगी। मेरे विद्यालय के अध्यापक ने हौसला बढ़ाया तो मैं इस दिशा में बढ़ी। ज्यादा भयभीत तो मैं तब हुई जब लेवल-2 की परीक्षा देने रेवाड़ी गई। जीवन में पहली बार तीन दिनों के लिए घर से दूर, खैर यह लेवल भी पार हुआ। अब मेरी ज़िंदगी एक मोड़ लेने जा रही थी। मेरे सामने दो वर्ष की लंबी अवधि थी, लेकिन वह कब पूरी हो गई, पता ही नहीं चला। अब महसूस हो रहा है कि ये दो साल ज़िंदगी के सबसे बेहतरीन साल थे। यहाँ हमने पढ़ाई करने से ज्यादा यह सीखा कि पढ़ाई किस प्रकार करनी है। जब पहली बार हॉस्टल में आई तो कई भाव एक साथ मन में उमड़े- घर से दूर जाने का डर, परीक्षा पास होने का हर्ष, परिजनों की उपस्थिति का अभाव, नये-नये मित्रों के साथ बनते नये रिश्ते की खुशी। इन मिश्रित भावों के बीच जब-जब धैर्य डोलने लगता तो नवीन सर हमें सँभालते। उन्हें देखते ही हम हिम्मत से भर जाते थे, जबकि वे कहते थे बच्चों को देखकर उन्हें हिम्मत मिलती है।

फिर कोविड महामारी ने हमारी परीक्षा ली। फाइनल परीक्षा से पहले एक टफ परीक्षा। लेकिन हमने हार नहीं मानी। ऑनलाइन पढ़ाई जारी रही। टैस्ट या परीक्षा तो हमारे लिए खेल बन गया था। दो साल में हमने जितने टैस्ट दिये, उतने सारे जीवन में नहीं दिये थे। टैस्टों के अभ्यास ने हमें इतना प्रवीण बनाया कि आईआईटी की परीक्षा के दिन दिल में कोई घबराहट नहीं थी। यहाँ अपने सहपाठियों के साथ बड़ा गहरा रिश्ता बन गया था। सुख-दुख की बात आपस में बाँटी जाती। किसी का जन्म दिन आता तो अन्य मित्र केक मँगाते, थाली, डिब्बे वाद्य-यंत्र बन जाते, और आरंभ हो जाता जन्मदिन का जश्न।

मैं वह दिन भूल नहीं सकती जब नवीन सर की कॉल आई, उन्होंने बताया कि मेरा आईआईटी क्लियर हो गया है, सुनते ही मैं रो पड़ी। मेरी आत्मा से आवाज़ आई- थैंक यू नवीन सर, थैंक यू मम्मी-पापा, थैंक यू 'सुपर-100'

भावना

इंद्र कुमार (ड्राइवर)

वीपीओ बनमंडोरी, फतेहाबाद

कॉलेज का नामः आईआईटी, दिल्ली

एक पुराना कथन है- 'चुस्त शरीर में ही चुस्त मस्तिष्क वास करता है', इस सोच को आगे बढ़ाते हुए हरियाणा-सरकार द्वारा सुपर-हंड्रेड के बच्चों के लिए मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास के लिए भी सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। आज के इतने प्रतिस्पर्धा भरे माहौल में विद्यार्थियों का मानसिक तनाव से गुज़रना एक स्वाभाविक सी प्रक्रिया है। पढ़ाई के दौरान

मन में कई बार बेचैन कर देने वाले नकारात्मक ख्याल आते हैं। उन सभी बेचैनी और नकारात्मक ख्यालों को दूर करने के लिए सुबह-सुबह सभी विद्यार्थियों की योगा और मेडिटेशन की क्लासेज होती हैं।

शिक्षा के साथ-साथ खेलने का समय और सामान उपलब्ध कराया जाता है। इससे सिर्फ शारीरिक विकास के साथ-साथ वे टीम में काम करना सीखते हैं। कक्षा कक्ष से बाहर का लगाव कक्षा में सीखने की प्रक्रिया को भी सहज बनाता है। विद्यार्थी न सिर्फ अपने साथियों के साथ, बल्कि अपने गुरुजन के साथ भी मैदान में खेल खेलते हैं। इसके अलावा सरकार द्वारा विद्यार्थियों को किताबें व आवश्यक पठन सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती हैं, जो आईआईटी/ नीट की परीक्षा की तैयारी के लिए काफी मददगार साबित होती है।

शुरुआत में सभी विद्यार्थी सुपर-हंड्रेड प्रोग्राम में अलग-अलग जगहों से अलग-अलग वेशभूषा में प्रोग्राम का हिस्सा बनते हैं, मगर प्रोग्राम में आने के बाद हरियाणा-सरकार द्वारा सभी विद्यार्थियों को सुपर-हंड्रेड की दो वर्दियाँ दी जाती हैं, जिन्हें पहनकर सही मायने में वह सब अपने आप को योद्धा से कम नहीं समझते हैं और वह सब अलग-अलग होते हुए भी एक बन जाते हैं।

सुपर-100 कार्यक्रम की अवधि दो वर्ष की है। यहाँ विद्यार्थियों को शिक्षा के कंपटीशन के साथ-साथ मौसम और परिवेश के बदलाव से भी लड़ना पड़ता है। इसमें कई बार विद्यार्थी शारीरिक तौर पर अस्वस्थ भी हो जाते हैं, जिसके लिए हरियाणा-सरकार द्वारा कैंपस में ही एक मेडिकल रूम का इंतजाम भी करवाया गया है, जहाँ पर एक अनुभवी एमबीबीएस डॉक्टर और साथ में एक नर्स चौबीस घंटे उपलब्ध रहती है। किसी भी प्रकार की दवाई या टेस्ट आदि सुविधाएँ हरियाणा-सरकार द्वारा सभी विद्यार्थियों को निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती हैं।

प्रोग्राम के दौरान विद्यार्थी अपने आप को किताबों और कैंपस की दीवार में पूरी तरह बाँध लेते हैं और जी-जान से अपने सपने को हासिल करने में लग जाते हैं। इस कारण कई बार उनका बाहरी दुनिया से नाता कमज़ोर पड़ जाता है, लेकिन सरकार द्वारा इस बात को सुनिश्चित किया जाता है कहीं इससे उनके विकास पर कोई बुरा असर न पड़े। तभी साल में एक बार सभी विद्यार्थियों को उनके अध्यापकों के साथ मनोरंजन और शैक्षिक भ्रमण के लिए भी ले जाया जाता है।

सुपर-100 प्रोग्राम में बच्चों को पढ़ाने से ज्यादा खुद पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसमें सबसे बड़ी भूमिका निभाते हैं रोज़ाना होने वाले टेस्ट, जो सही मायनों में अध्यापक से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रोज़ाना होने वाले इन टैस्टों की मदद से कॉम्पिटेटिव माहौल बनता है। कितने विद्यार्थी एक दूसरे से बेहतर होने के प्रयास में खुद को रोज़ाना बेहतर से बेहतर बनाते हैं। टेस्ट में जो प्रश्न हल नहीं होते हैं, वे अपने सहपाठियों से पूछते हैं और इसी एक दूसरे को सीखने-सिखाने के प्रयास में वे सवालों को खुद हल करना सीख जाते हैं और अपने अध्यापक पर कम निर्भर रहते हैं।

प्रोग्राम में अध्यापक सिर्फ एक शिक्षक के रूप में नहीं, बल्कि एक लीडर की भूमिका में होते हैं। विद्यार्थियों को अपने पर निर्भर होना नहीं, बल्कि उनको खुद पर निर्भर होना सिखाते हैं। अध्यापक कैंपस में विद्यार्थियों के साथ रहते हैं। जिस वजह से वह उनके सुख और दुख दोनों का हिस्सा बनते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के क्षेत्र में सुपर-100 प्रोग्राम ने गुरु-शिष्य परंपरा को पुनर्जीवित किया है।

1 अगस्त, 2018 को हरियाणा राज्य की शिक्षा व्यवस्था में एक नया अध्याय लिखा जाना शुरू हो रहा था। सुपर-100 का वह पहला बैच, जो ट्रायल प्रोजेक्ट के तौर पर शुरू हुआ था और उसमें शामिल वे सभी 100 योद्धा जिन्होंने अपनी कड़ी मेहनत के बल पर इस प्रोजेक्ट को सफल बनाया और आने वाले सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए कामयाबी का नया रास्ता खोला। उन सभी विद्यार्थियों के सम्मान में 1 अगस्त को सुपर-100 डे

तेज़ हवाओं में भी जो परिंदे अर्श छूते हैं उनके पर नहीं, हौसले मज़बूत होते हैं

मेरा नाम ऋतु है। मेरे पिता श्री जगमाल सिंह घर चलाने के लिए मज़दूरी करते हैं। जब मेरा सिलेक्शन सुपर-100 में हुआ तो प्रिंसिपल सर ने खुद मुझे कॉल करके समझाया कि बेटी रेवाड़ी, अंबाला से दूर बहुत है, मगर तेरी मंजिल भी तो दूर तक जाने की है न, तेरी जिंदगी बदल जाएगी। बेटी डर मत, चली जा।

मेरे पापा और मम्मी दोनों मुझे रेवाड़ी तक छोड़ने आए और उन्हें जाता देख मैं बहुत रोई। रेवाड़ी आकर जिंदगी की किताब में एक अलग ही पन्ना खुला जिसे कहते है हॉस्टल। जो लड़की बचपन से कभी नानी और बुआ के घर से आगे नहीं गई वो आज हॉस्टल में इतने सारे अनजान लोगों के साथ रहने आई है। शुरू के दिनों में तो मैं बहुत रोई, घर की भी बहुत याद आई। फिर धीरे-धीरे सुपर-100 टीचर और हमारे साथी ही मेरा परिवार बन गए और कुछ लोग तो शायद परिवार से भी ज्यादा।

नवीन सर और साकेत सर ने मुझे समझाया कि आप घर से अलग होकर भी एक लक्ष्य के लिए काम कैसे कर सकते हैं। नवीन सर बहुत आसान और अनोखे तरीके से पढाते थे। एक दम रोजमर्रा की ज़िंदगी वाले उदाहरण देकर मुश्किल से मुश्किल समस्या भी चुटकियों मे हल कर देते थे।

वहीं साकेत सर गणित को भी खेल बना देते थे। इतनी ऊर्जा और जोश के साथ पढ़ाते थे कि गणित जैसा विषय भी रुचिकर लगने लगता है। जब रोज़ टेस्ट पेपर हल करने से परीक्षा देना भी हँसी-खेल बन गया। इसकी वजह से हमारी समस्या को सुलझाने की हमारी गति काफी बढ़ गई और यही गति आईआईटी की प्रवेश परीक्षा में काम आती है। जिस दिन मेरा आईआईटी में सिलेक्शन हुआ, मैंने सबसे पहले अपने परिवार वालों को और प्रिंसिपल सर को कॉल करके बताया। उस दिन मैं इतनी खुश थी कि मैं फोन पर बात तक भी सही तरह से नहीं कर पाई थी।

ऐसा कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि एक गरीब परिवार की बच्ची जिसके लिए शिक्षा मात्र ही एक सपना था, वह आज देश के सबसे प्रतिष्ठित संस्थान आईआईटी से बीटेक करेगी। मेरे लिए यह किसी चमत्कार से कम नहीं था। इसके लिए मैं हरियाणा सरकार का तहे दिल से धन्यवाद करना चाहूँगी कि उन्होंने हम जैसे साधारण परिवार से आए हुए बच्चों को इतनी ऊँची उड़ान भरने के लिए न सिर्फ सपने दिखाए, बल्कि उनको पूरा करने में भरपूर सहयोग भी दिया।

ऋतु
पिताः जगमाल सिंह (मजदूर)
पताः नगावान, नारायणगढ़, अंबाला
कॉलेज का नामः आईआईटी, पटना

हर रोज़ गिरकर भी मुकम्मल खड़े हैं देख ज़िंदगी मेरे हौसले तुझसे बड़े हैं

मेरा नाम अमित कुमार है। कृषि कर्म परिवार की आजीविका का स्रोत है। एक दिन मेरे स्कूल के अध्यापक ने हमारी कक्षा में आकर सुपर-100 के बारे में बताया। मुझे तो उम्मीद ही नहीं थी कि मैं इस परीक्षा को पहले लेवल में भी क्लियर कर पाऊँगा तो मैंने परीक्षा न देने का निर्णय लिया, लेकिन मेरे अध्यापक ने मुझे प्रेरित किया। मैंने परीक्षा दी, उसमें मुझे 56 अंक प्राप्त हुए। इतने कम अंक होने से मुझे लगा कि मेरा चुनाव नहीं हो सकता, लेकिन मेरा चुनाव हो गया। पता चला कि अब सभी बच्चों को रेवाड़ी जाकर पढ़ना होगा, जिसके बाद लेवल-2 की परीक्षा ली जाएगी। इस बार भी मेरा मन उत्साह से भरा हुआ नहीं था, लेकिन इस बार भी भाग्यवान रहा, मैं सुपर-100 में चुन लिया गया।

मुझे लगा कि किस्मत मेरा साथ दे रही है। मुझे अवसर मिल गया है तो मुझे अब इसका पूरा लाभ उठाना चाहिए। मैंने दिल लगाकर पढ़ाई आरंभ की, लेकिन आरंभ के तीन महीने मुझे महसूस होता रहा कि मैं चीज़ों को ठीक प्रकार से समझ नहीं पा रहा हूँ। परंतु मैंने आत्मविश्वास को कभी कम नहीं होने दिया। अब चीज़ें धीरे-धीरे समझ में आने लगीं। तब तक मैंने ग्याहरवीं कक्षा पास कर ली। बारहवीं में आए तो कोविड महामारी आ गई। बारहवीं कक्षा पास हो गई। नीट की परीक्षा में केवल 416 अंक आए जो काफी कम थे। मुझे अंदर से महसूस होने लगा कि मैं इससे बेहतर अंक ले सकता था। मैंने ड्रॉप किया और एक और साल सुपर-100 में रहा। जूनियर विद्यार्थियों के साथ बैठना कभी आसान नहीं होता, लेकिन गुरुजन ने सदैव मेरा हौसला बढ़ाया।

इस बार नीट परीक्षा में मेरे 556 अंक आए। मुझे लगा कि भाग्य मेरी अभी और परीक्षा ले रहा है। परिणाम से मुझे कतई संतुष्टि नहीं थी। मेरे प्रयास सफल नहीं हो पा रहे थे। अब मेरे सामने दो रास्ते थे-प्रयास छोड़ देना या उन्हें जारी रखना। मैंने दूसरा रास्ता चुना। मन में छाई निराशा को भूलते हुए फिर एक साल ड्रॉप किया और घर पर पढ़ाई जारी रखी। इस बार मेरे 595 अंक आए और अब मैं श्री अटल बिहारी मेडिकल कॉलेज, फरीदाबाद में एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहा हूँ। मैं तो यही कहूँगा कि कई बार ज़िंदगी बार-बार परीक्षाएँ लेती है। धैर्य न खोयें और सतत प्रयास जारी रखेंगे। अंततः सफलता अवश्य मिलती है।

अमित कुमार
वीपीओ ढाणी मोहब्बतपुर, मंडी आदमपुर, हिसार
कॉलेज का नाम- श्री अटल बिहारी मेडिकल कॉलेज, फरीदाबाद

सफलता एक दिन में नहीं मिलती मगर ठान लो तो एक दिन ज़रूर मिलती है

मेरा नाम काजल है और मैं फतेहाबाद जिले के इंदाछोई गाँव से हूँ। मेरे पिताजी का नाम सुभचरण और माँ का नाम सरोज रानी है। मेरे पिताजी एक किसान हैं और माँ घर सँभालती हैं। मेरे छोटे भाई का नाम है रजत है, वह आठवीं कक्षा में पढ़ता है। स्कूल से आकर मेरे भाई का काम देखना, उसे पढ़ाने की जिम्मेदारी मेरी ही है और मुझे पसंद भी है।

मैं पढ़ाई में ठीक हूँ, मगर कोई ज्यादा बड़े सपने नहीं हैं मेरे भविष्य को लेकर। हाँ, थोड़ा विज्ञान में रुचि हैं। मेरी दसवीं की परीक्षाएँ हो चुकी थीं कि एक दिन अखबार में मैंने सुपर-100 के बारे में पढ़ा और मुझे अच्छा लगा, मैने सोचा कोशिश करके देख लेते हैं। मेरे स्कूल अध्यापक की सहायता से मैंने अपना रजिस्ट्रेशन फॉर्म भरा। जितना स्कूल में पढ़ाया था, वही पेपर में आया था। तो मेरा लेवल वन पास हो गया। मैं बहुत ख़ुश थी। मैं घर आई और परिवार में सबको बताया। भाई ने मुझसे पूछा कि इससे क्या फायदा होगा। मैंने कहा अगर मैं इसमें पास हो गई तो मै जिंदगी में कुछ बड़ा कर पाऊँगी।

फिर मैंने अपने भाई से पूछा कि तू क्या बनना चाहता है? उसने जो कहा उसे सुन कर मेरे आँसू आ गए। उसने पूरे विश्वास से मेरी आँखों मे देख कर कहा कि दीदी मैं तेरी तरह बनना चाहता हूँ। उस दिन मैंने ठान लिया कि अब मैं कुछ ऐसा करके दिखाऊँगी कि मेरे भाई को मुझसे प्रेरणा मिले। अगले दिन हमें लेवल-दो के लिए रेवाड़ी जाना था। वहाँ हमारी 3-4 दिन तैयारी कराई गई और फिर हमारा पेपर हुआ। जब मुझे पता लगा कि मेरा पेपर क्लीयर हो गया, मैं स्कूल में थी और मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। मैंने घर आते ही भाई को गले लगा कर बोला- भाई मै जा रही हूँ कुछ बड़ा करने। इन दो सालों में हमने बहुत कुछ सीखा। मैथ्स, फिजिक्स, केमिस्ट्री के साथ-साथ बहुत सी बातें सीखीं। फिर लॉकडाउन के कारण हमें घर आना पड़ा, लेकिन लॉकडाउन में क्लासेज ऑनलाइन चलती रहीं ताकि आईआईटी की अच्छे से तैयारी हो पाए।

जिस दिन मेरे आईआईटी के पेपर का परिणाम आया, मैं दौड़ कर अपने भाई के पास गई जहाँ वह खेलने जाता था और मैंने उसको गले लगा लिया कि भाई देख तेरी बहन का आईआईटी में सिलेक्शन हो गया है। अब वह इंजीनियर बनेगी। इसकी वजह तुम हो भाई। तुमने मुझे हौसला दिया। देख आज मैं पूरे भारत के सबसे मुश्किल से मिलने वाले आईआईटी कंप्यूटर साइंस कोर्स बॉम्बे में जाऊँगी।

काजल
पिताः सुभचरण मलिक (किसान)
वीपीओ इंदाछोई, टोहाना, फतेहाबाद

के तौर पर चिह्नित कर दिया गया है। हर वर्ष 1 अगस्त को विकल्प फाउंडेशन के कैंपस में एक भव्य समारोह किया जाता है, जिसमें नए बैच के और प्रोग्राम पास आउट कर चुके विद्यार्थी शामिल होते हैं। गीत-संगीत का एक भव्य कार्यक्रम रखा जाता है और कामयाबी से आईआईटी और नीट में दाखिला पा चुके विद्यार्थी अपने सुपर-100 के नए साथियों का हौसला बढ़ाते हैं। सुपर-100 के विद्यार्थी एक परिवार की तरह हो जाते हैं और इस कार्यक्रम के दौरान जैसे किसी परिवार में शादी के दौरान पूरा परिवार

हाथ बँटाता है, वैसे ही सभी विद्यार्थी मिलकर इस उत्सव का आयोजन करते हैं।

Super 100 RESULT			
STREAM	IIT	NIT/ BITS/ IIIT	ISRO
NON-MEDICAL	43	37	1
STREAM	AIIMS	OTHER GOVT MEDICAL COLLEGE/ MBBS	
MEDICAL	2	14	

जब हमारे ये बच्चे कड़ी मेहनत करके आईआईटी या एमबीबीएस की परीक्षा पास कर लेते हैं तब भी उनके परिवार के पास इतने पैसे नहीं होते कि वो अपने बच्चों को आईआईटी या एम्स जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में भेज सकें। उस समय हम उन्हें एजुकेशन लोन लेने में सहायता करते हैं। इसके साथ-साथ कुछ संस्थाएँ बच्चों को छात्रवृत्ति भी उपलब्ध कराती हैं, जिसमें से एक हैं- विनी सन मेरिट कम नीड-बेस्ड छात्रवृत्ति, जो लोटस पेटल फाउंडेशन द्वारा दी जाती है। विनी सन छात्रवृत्ति के लिए पूरे भारत से 50 लड़कियों का चयन किया जाता है, जिनके परिवार की आय प्रति वर्ष 5 लाख से कम होती है।

जब बच्चा आईआईटी या एमबीबीएस की परीक्षा पास कर लेता है उसके बाद उसे लोटस पेटल फाऊंडेशन की वेबसाइट पर जाकर अपना फॉर्म भरना होता है, जोकि निम्नलिखित है (आवेदन करने की अंतिम-तिथि दिसम्बर या जनवरी तक की होती है।)-

https://www.lotuspetalfoundation.org/winnie-sun-scholarship-program-for-girl-child/

विनी सन छात्रवृत्ति में आवेदन करने ले लिए कुछ मापदंड हैं- छात्रों ने अपनी कक्षा 10वीं और 12वीं की परीक्षा न्यूनतम 70% अंकों से पास की हो और 12वीं कक्षा मान्यता प्राप्त राज्य या केंद्रीय बोर्ड से की हो। आरक्षित वर्ग (SC/ST/OBC) के छात्रों के पास 10वीं और 12वीं कक्षा में 60% अंक होने चाहिएं।

इसके बाद फाउंडेशन खुद बच्चों से संपर्क करती है। उनके कुछ जरुरी कागज़ात लेती है, जैसे- परिवार की सालाना आय, बीपीएल सर्टिफिकेट, बच्चे का परिणाम। फिर उनमें से कुछ बच्चों को चुन लिया जाता है। अगले चरण में उन बच्चों का इंटरव्यू होता है। इंटरव्यू में सेलेक्ट हुए बच्चो को यह स्कॉलरशिप मिलती है। 65000/- प्रति वर्ष रुपये तक की छात्रवृत्ति बच्चे के कॉलेज के अकाउंट में भेजे जाते हैं, जिसमें कॉलेज शुल्क, रहने का खर्च, यात्रा आदि का खर्च शामिल होता है।

निदेशक
मिशन बुनियाद

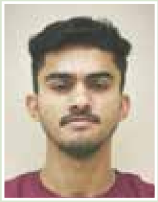

लिखते हैं जो मेहनत की स्याही से इरादे नहीं होते हैं खाली पन्ने उनकी किस्मत में

मेरा नाम प्रवीण है, मेरे पिताजी एक किसान हैं। मैं मंडी डबवाली सिरसा का रहने वाला हूँ। मुझे लगता है कि जिंदगी में आपकी सफलता बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि आप किस माहौल में रहते हैं और किस प्रकार के व्यक्तित्व के लोग आपके साथ रहते हैं। मेरे माता-पिता ने सदैव इस बात का ध्यान रखा कि मैं अच्छे लड़कों के साथ ही दोस्ती करूँ। मेरे जीवन के अलग-अलग पड़ावों में मेरे अनेक दोस्तों की भूमिका काफी प्रेरक और सकारात्मक रही।

लेवल-2 पास होने के बाद मेरा सुपर-100 में सिलेक्शन हो गया था। एक दिन कक्षा में एक सवाल पर उलझ गया। काफी देर माथा-पच्ची करने के बाद भी हल नहीं मिला। मैंने पास बैठे लड़के से सहायता माँगी, तो उसने हर्ष के साथ मेरी सहायता की और मैं सवाल हल करने में सफल हो गया। पता चला कि उसका नाम राहुल है। यह उसके साथ मेरी पहली मुलाकात थी। पता चला कि हॉस्टल में भी वह मेरे निकट के कमरे में ही रहता था। फिर क्या था, मुलाकात रोज़ाना होने लगी। वह भी पढ़ाई के विषय में मेरी तरह काफी गंभीर था। जल्दी ही हम एक दूसरे के साथ खूब घुल-मिल गए। हम अपने मन की हर बात एक दूसरे के साथ साझी करने लगे। जब-जब मेरे मन में किसी प्रकार का निराशा का भाव आता तो वह मुझे हौसला देता था। कभी-कभी जब किसी टेस्ट में कम अंक आने के कारण वह परेशान होता तो मैं उसका आत्मविश्वास डोलने न देता।

समय बीतता गया। ग्यारहवीं की परीक्षा हो गई, फिर कोविड महामारी ने दस्तक दी। अब वह समय आ गया था जिसकी हम शिद्दत से प्रतीक्षा कर रहे थे- आईआईटी की परीक्षा। अपने-अपने घरों से ही हम इस परीक्षा को देने गये। परीक्षा के दिन सुबह ही मैंने राहुल को फोन पर 'ऑल द बैस्ट' कहा और ख़ुशी-ख़ुशी अपना पेपर देने चला गया। पेपर में डर तो नहीं लगा, क्योंकि सुपर-100 में इतने सारे पेपर देने के बाद वो डर तो भाग गया था। पेपर अच्छा हो गया और हम दोनों का ही जेईई मेंस क्लियर हो गया।

फिर जेईई एडवांस का पेपर भी अच्छी तरह हो गया, लेकिन जब राहुल ने बताया कि उसकी परीक्षा उम्मीद के अनुसार नहीं हुई, तो मेरा मन उदास हो गया। कुछ दिनों बाद हमारे आईआईटी एडवांस का रिजल्ट आया तो मैंने खुद से पहले राहुल का परिणाम देखा। यह देखकर मेरी ख़ुशी का ठिकाना न रहा कि वह पास हो गया है। फिर जब अपना परिणाम देखा तो ख़ुशी दुगुनी हो गई। वह मेरी ज़िंदगी का सबसे खास दिन था।

आज के दिन राहुल आईआईटी जम्मू में है और मैं आईआईटी दिल्ली में, हालांकि दिल्ली से जम्मू का फासला बहुत लंबा है, लेकिन मन नज़दीक हों तो भौतिक दूरियाँ कहाँ मायने रखती हैं।

प्रवीण
कॉलेज का नाम- आईआईटी, दिल्ली

क्या है मिशन बुनियाद?

कुलदीप मेहता

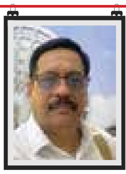

मिशन बुनियाद- एक ऐसा कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य हरियाणा राज्य के शिक्षा क्षेत्र में एक नई क्रांति लाने की शुरुआत करना है। मिशन बुनियाद एक फलते वृक्ष (सुपर-100) की वह शाखा है जिसमें आगे आने वाले वर्षों में कई फल आने बाकी हैं।

इस प्रोग्राम की शुरुआत वर्ष 2022 में हुई जिसमें पूरे हरियाणा राज्य से 56,000 विद्यार्थियों ने नामांकन करवाया, जिसके पश्चात उनकी दो लेवल की परीक्षा ली गई और अंत में लगभग 3,000 विद्यार्थियों का चुनाव किया गया।

रजिस्ट्रेशन एलिजीबिलिटी-

इस प्रोग्राम के तहत कक्षा नौवीं के विद्यार्थियों का दाखिला किया जाता है जिसमें हरियाणा राज्य के सरकारी स्कूलों में आठवीं कक्षा में पढ़ रहे सभी विद्यार्थियों को स्वेच्छा से नामांकन का मौका दिया जाता है। ऐसे सभी विद्यार्थी जो इस प्रोग्राम के लिए नामांकन करवाना चाहते हैं, वे मिशन बुनियाद की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाकर रजिस्ट्रेशन फॉर्म में अनिवार्य विवरण की जानकारी देते हुए अपना पंजीकरण करवा सकते हैं। सभी पंजीकृत विद्यार्थी अपने पंजीकरण फॉर्म की प्रति डाउनलोड कर सकते हैं।

परीक्षा एवं चयन प्रक्रिया-

रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात सभी पंजीकृत विद्यार्थियों को दो स्तर की प्रवेश परीक्षाओं को

वर्तमान सत्र में मिशन बुनियाद की समयरेखा :

जागरूकता अभियान -	22 दिसंबर, 2022 - 30 जनवरी, 2023
पंजीकरण-	1 - 31 जनवरी, 2023
लेवल-1 परीक्षा-	7 फरवरी, 2023
लेवल- 1 का परिणाम-	14 फरवरी, 2023
लेवल- 2 -	22 फरवरी, 2023
लेवल-2 का परिणाम-	27 फरवरी, 2023
लेवल-3 (प्रेरक संगोष्ठी + मूल्यांकन) -	1 मार्च - 15 अप्रैल, 2023
प्रवेश-	16 अप्रैल, 2023 - 22 अप्रैल, 2023
कक्षा प्रारंभ-	24 अप्रैल, 2023

(9वीं कक्षा के छात्रों के लिए दूसरे चरण की प्रवेश परीक्षा फरवरी के तीसरे सप्ताह में आयोजित की जाएगी, जहाँ शीर्ष 400 छात्रों को ऑफ़लाइन आवासीय कार्यक्रम के लिए शॉर्टलिस्ट किया जाएगा, बाद के 200 छात्रों को प्रतीक्षा सूची में रखा जाएगा और शेष सफल छात्रों को 10वीं कक्षा में (ऑनलाइन) जारी रखा जाएगा। ऑफलाइन आवासीय कक्षाएँ अप्रैल, 2023 के पहले सप्ताह से शुरू होंगी।)

सफलतापूर्वक पार करना होता है। इन परीक्षाओं के सेंटर एवं परीक्षा की तारीख इन सभी विद्यार्थियों को कई माध्यम से सूचित की जाती है। स्कूल प्रिंसिपल तो सूचना देते ही हैं, साथ ही समाचार-पत्रों व अन्य संचार के माध्यमों से भी सूचना दी जाती है।

लेवल-1 परीक्षा-

लेवल-1 परीक्षा एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं जटिल प्रक्रिया है। जैसे कि ऊपर भी उल्लेख किया गया है, मिशन बुनियाद में 56,000 से भी अधिक विद्यार्थियों ने नामांकन करवाया। इतने विशाल स्तर पर हरियाणा राज्य के सभी 22 जिलों में परीक्षा का आयोजन करना एवं यह सुनिश्चित करना कि हर जिले में वहाँ से नामांकित विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर परीक्षा केंद्रों का चुनाव, परीक्षा के लिए प्रश्न-पत्रों की व्यवस्था एवं सुचारु रूप से परीक्षा को संचालित करवाना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन सरकार एवं शिक्षा विभाग के सहयोग से ये कार्य काफी सरल हो जाता है और ये पूरी प्रक्रिया सुचारु रूप से पूर्ण की जाती है।

इस परीक्षा में विद्यार्थियों को उनके स्कूल में अध्ययन किए गए विषयों से संबंधित प्रश्न ही दिए जाते हैं। विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं के नियमों से अवगत कराने के लिए इस परीक्षा में हर गलत उत्तर पर नकारात्मक अंक भी दिए जाते हैं, जिसके पश्चात वे सभी विद्यार्थी जो निर्धारित उत्तीर्ण अंक पाकर इस परीक्षा में सफल होते हैं, उन्हें लेवल-2 की परीक्षा देनी होती है।

लेवल-2 परीक्षा-

मिशन बुनियाद की लेवल-2 की परीक्षा की प्रक्रिया लेवल-1 के मुकाबले आसान होती है, क्योंकि इसमें शामिल होने वाले विद्यार्थियों की संख्या काफी कम हो जाती है। 56,000 नामांकित विद्यार्थियों में से लेवल-1 की परीक्षा पार कर के लेवल-2 में लगभग 20,000 विद्यार्थी ही शामिल हो पाते हैं। हालांकि लेवल-2 की परीक्षा अपेक्षाकृत आसान प्रतीत होती है, लेकिन इसमें शामिल हो रहे विद्यार्थियों का अन्वेक्षण और भी बारीकी से करना होता है, ताकि एक भी योग्य विद्यार्थी किसी भी कारणवश इस प्रोग्राम के द्वारा मिलने वाले अवसरों से वंचित न रह जाए।

वे सभी विद्यार्थी जो लेवल-2 की परीक्षा में उत्तीर्ण

होते हैं, उन सभी विद्यार्थियों में से हर जिले में उपलब्ध सीटों के आधार पर टॉप विद्यार्थियों का चयन किया जाता है, जिसके पश्चात उन्हें ओरिएंटेशन प्रोग्राम में भाग लेना होता है।

ओरिएंटेशन प्रोग्राम-

विद्यार्थियों के चयन के बाद आंरिएन्टेशन की प्रक्रिया आरंभ होती है। इस दौरान इन विद्यार्थियों को एक एडमिशन फॉर्म भरना होता है, जिसके साथ-साथ उन्हें कुछ आवश्यक दस्तावेज़ जैसे- आठवीं कक्षा का रिपोर्ट कार्ड, मिशन बुनियाद का एडमिशन कार्ड, अपना एवं अपने अभिभावकों का आधार कार्ड इत्यादि देने होते हैं।

ओरिएंटेशन प्रोग्राम के दौरान इन सभी विद्यार्थियों को इस प्रोग्राम में दी जा रही सारी सुविधाएँ, इसकी कार्य प्रणाली और इसके लाभों के बारे में विस्तार से बताया जाता है।

ओरिएंटेशन प्रोग्राम में सभी विद्यार्थियों के साथ-साथ उनके अभिभावकों को भी सम्मिलित किया जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य है कि अभिभावक भी अपने बच्चों की पढ़ाई के विषय में जागरूक रहें और उन्हें सदैव प्रोत्साहित करें। ऐसा तभी संभव है जब इन विद्यार्थियों के अभिभावकों को भी इस प्रोग्राम से मिलने वाली सभी सुविधाओं एवं आगामी वर्षों में इस प्रोग्राम के माध्यम से हो सकने वाले प्रभावशाली परिणामों से अवगत कराया जाए। इसके अलावा इस दौरान अभिभावक एवं विद्यार्थियों की शंकाओं का भी निवारण किया जाता है।

सैटेलाइट सेंटर-

हरियाणा राज्य के सभी जिलों में ओरिएंटेशन प्रोग्राम

इफ नॉट यू, दैन हू?

बुनियाद का अर्थ होता है किसी भी चीज़ की नींव। मुझे पता है कि इस कार्यक्रम में जुड़े सभी बच्चों की नींव बहुत मजबूत है, तभी तो आप इस कार्यक्रम का हिस्सा बने हैं। लेकिन अब सभी बच्चों को इस बात पर ध्यान देना है कि उनकी नींव और मज़बूत कैसे बने।

मैं एक बहुत ही छोटी से जगह से आता हूँ, 10वीं कक्षा तक एनटीएसई जैसी परीक्षाओं के बारे में मुझे पता ही नहीं था, न ही किसी ने हमें इस बारे में बताया था। फिर बड़े होने के बाद ही इनके बारे में समझ विकसित हुई। पर ये बहुत ही अच्छी बात है कि इस बुनियाद कार्यक्रम के बच्चों को इन सब के लिए पढ़ाई के साथ-साथ तैयारी कराई जा रही है, जो उनके सुनहरे भविष्य के लिए बहुत ही लाभप्रद साबित होगा।

मेरे एक शिक्षक हैं। उन्होंने एक बार कहा था कि- 'इफ नॉट यू, दैन हू?' इसलिए आप सभी को अगर कोई अवसर मिल रहा है तो उसे पकड़ लेना चाहिए। आप बच्चों को बुनियाद में अलग तरीके से पढ़ाया जाएगा, यह आपके आत्मविश्वास को बढ़ावा देगा। मेरा मानना है कि तीन चीजें हमारी सफलता की ओर हमें ले जाती हैं, वे हैं मेहनत, आत्मविश्वास और होशियारी। इसलिए आपको इन तीनों चीजों को ध्यान में रखकर अपने लिए अच्छा अवसर ढूँढ़ना है और लक्ष्य से विचलित नहीं होना है।

शांतनु शर्मा
उपायुक्त, कुरुक्षेत्र

के सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाने के पश्चात विद्यार्थी अपनी सुविधा व इच्छा से चुने हुए सैटेलाइट सेंटर में अपनी क्लास लगाते हैं। ये सेंटर सभी आधुनिक सुविधाओं जैसे- हाई डेफ़िनीशन वीडियो स्क्रीन, ऑडियो फ़ैसिलिटी, माइक, इंटरनेट कनेक्टिविटी आदि से लैस हैं। इन सेंटर में हर वह सुविधा दी गई है जो इस बात को सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थियों की क्लास बिना किसी रुकावट के चल सके। इन सैटेलाइट सेंटरों में विषयों की बहुत ही

विस्तार से पढ़ाई कराई जाती है। विज्ञान और गणित विषय पर विशेष बल दिया जाता है। ये कक्षाएँ सप्ताह में 6 दिन लगाई जाती हैं, जहाँ पढ़ाई के साथ-साथ उनको पढ़ाए जा रहे पाठ्यक्रम से संबंधित अपने डाउट्स क्लियर करने का मौका भी दिया जाता है। इन छात्रों का नियमित रूप से टेस्ट लिया जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि छात्रों को पढ़ाए जा रहे पाठ्यक्रम को वे कितनी अच्छी प्रकार से समझ पा रहे हैं। यह प्रोग्राम हरियाणा के सभी राज्यों में कुल मिला के 51 सैटेलाइट सेंटर्स के साथ वर्ष 2022 में, 2800+ विद्यार्थियों के साथ सफलतापूर्वक

जो तुम्हें मिला है, वह तुम्हें लौटाना भी है

'मिशन बुनियाद' हरियाणा-सरकार का एक ऐसा कार्यक्रम है, जो शिक्षा विभाग द्वारा सरकारी विद्यालय के बच्चों के लिए शुरू किया गया है। यहाँ शिक्षार्थियों के मार्गदर्शन के लिए और अभिभावकों की हिम्मत बढ़ाने के लिए नवीन मिश्र जी हैं, जो बहुत सालों से इस शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं और सुपर-100 जैसे कार्यक्रम के जरिए सरकारी स्कूल के सैकड़ों बच्चों के जीवन को सँवार रहे हैं। मैं बच्चों को कहना चाहता हूँ, आपको इस कार्यक्रम से कुछ नया सीखने का सुनहरा अवसर तथा मदद मिल रही है, तो आपका भी यह कर्तव्य बनता है कि आप भी अपनी नींव को मज़बूत करें, आने वाले समय में उच्च संस्थानों में पढ़ें और 'मिशन बुनियाद' को नई ऊँचाइयों तक ले कर जायें, ताकि सरकार इस कार्यक्रम को सालों साल आगे बढ़ा पाए और जिससे पिछड़े वर्ग व पिछड़े क्षेत्र के बच्चों को मदद मिल पाए।

मेरा मानना है कि किताबों में साक्षात माँ सरस्वती विराजमान रहती हैं। उनमें जो सीख होती है उसको जहन में उतार लेना जरूरी होता है। विद्यार्थियों का कर्तव्य है निरंतर सीखते रहना। सीखने की प्रक्रिया आपकी जड़ों को इतना मज़बूत कर देती है कि आप ज़िंदगी के सफ़र में कहीं पीछे नहीं रहेंगे। इसलिए सरकार बुनियाद कार्यक्रम के ज़रिए विद्यार्थियों को सभी सुविधाएँ देते हुए गुणावत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना चाहती है। यहाँ हर एक बच्चे को व्यक्तिगत प्रयास करना पड़ेगा, खुद को मज़बूत कर आगे बढ़ना पड़ेगा। एक दिन आप सभी जब सफल हो जाएँगे, तब अपने इस आज को याद रखना कि जितनी हिम्मत या सहयोग आपको मिला है उतना आपको अपने समाज को ही वापिस भी देना होगा। आगामी पीढ़ी के बच्चों की हिम्मत बढ़ानी होगी, उनको आगे बढ़ने के लिए रास्ता भी दिखाना होगा।

जय कृष्ण आभीर
उपायुक्त, महेंद्रगढ़

दीप से दीप जलता है

सुपर-100 के बाद सरकार के 'मिशन बुनियाद' नामक नए कदम को हम प्रतिभाओं की खोज कह सकते हैं, जहाँ हजारों विद्यार्थियों में से प्रतिभावान विद्यार्थियों को चुना जाता है। मुझे उम्मीद है कि यह कार्यक्रम भी सुपर-100 प्रोग्राम जैसा ही सफल रहेगा।

कहा जाता है कि सफल व्यक्तियों की कहानियाँ दूसरों के लिए प्रेरणा बनती हैं। आपकी सफलता हजारों लोगों की सफलता की प्रेरणा बन सकती है, इसलिए मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि यह कार्यक्रम सिर्फ इन कुछ बच्चों तक ही सीमित नहीं रहेगा, ये बच्चे आने वाले समय में उच्च संस्थानों में जाएँगे, डॉक्टर-इंजीनियर बनेंगे फिर इन्हें देख कर और हजारों बच्चे प्रेरित होकर 'मिशन बुनियाद' की ओर कदम बढ़ाएँगे। इसलिए इस कार्यक्रम के बच्चों की ये जिम्मेदारी है कि वे अच्छे से पढ़कर जीवन में आगे बढ़ें।

'मिशन बुनियाद' सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह बुनियाद है विद्यार्थियों के जीवन में एक अच्छी नींव बनाने की। राज्य के शिक्षा विभाग का यह एक बहुत ही सफल कार्यक्रम साबित होगा, जो इस शिक्षा के क्षेत्र में एक नया इतिहास रचेगा। आखिर में मैं इस नए कदम के लिए सभी बच्चों को, अभिभावकों को, विकल्प फाउंडेशन व मिशन बुनियाद के साथ हरियाणा सरकार के शिक्षा विभाग को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

ललित सिवाच
उपायुक्त, सोनीपत

कोई बाधा इनका मार्ग अवरुद्ध न कर पायेगी

'मिशन बुनियाद' के सभी विद्यार्थियों से मैं कहना चाहती हूँ कि सरकार आपके कल्याण के लिए जी-जान से प्रयत्नशील है। आपको सभी चिंताओं से मुक्त होकर अपनी पढ़ाई पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहिए। आपको अपने आप को सौभाग्यशाली मानना चाहिए कि आपको इतना अच्छा अवसर मिला है कि आप अपने स्वप्नों को साकार कर सकते हैं। इनके अध्यापकों और शिक्षकों से भी आग्रह करना चाहूँगी कि वे देखें कि अब इनके और इनके उज्ज्वल करियर के बीच में कोई बाधा न आने पाये। शिक्षकों, अभिभावकों का सहयोग व मार्गदर्शन ही विद्यार्थियों के लिए विकास के नव-अवसर खोलता है। मुझे यकीन है कि ये विद्यार्थी अपनी मेहनत और लगन के बल पर आगे बढ़ते जायेंगे तथा अन्य विद्यार्थियों के लिए भी एक प्रेरणा बनेंगे। इन बच्चों को कल को उच्च पदों पर आसीन होते हुए देखकर इनके परिजन ही नहीं, इनके शिक्षक, इनके गाँव, शहर, प्रदेश के लोग भी अत्यंत हर्षित महसूस करेंगे। ये गौरव के क्षण होंगे इनके परिवार के लिए ही नहीं, हम सबके लिए भी। सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनायें।

संगीता तेतरवाल
उपायुक्त, कैथल

आत्मविश्वास बढ़ाता सुपर-100

राजकीय विद्यालयों के बारे में यह धारणा होती है कि वहाँ के बच्चों में आत्मविश्वास की कमी होती है। कुछ ऐसी रुकावटें हैं जो उनके पैरों की जंजीर बन जाती हैं। लेकिन सुपर-100 कार्यक्रम की अपार सफलता ने बता दिया है कि अगर उन बच्चों को आगे बढ़ने के उचित अवसर मिलें तो वे आत्मविश्वास से भरपूर भी दिखाई देते हैं और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हैं।

मिशन बुनियाद कार्यक्रम राज्य सरकार की तरफ से, बच्चों के बेहतर व सुनहरे भविष्य की बुनियाद को शुरू से ही मज़बूत बनाने की एक नई शुरुआत है। मेरा मानना है कि ये सभी बच्चे जीवन की राह में आगे बढ़ेंगे और सरकारी विद्यालयों की छवि को बदलेंगे। विकल्प फाउंडेशन के सभी कार्यकर्ता बहुत ही व्यवस्थित और जोश के साथ अपने दायित्व को निभा रहे है, इसलिए मुझे भरोसा है कि मिशन बुनियाद कार्यक्रम भी सुपर-100 कार्यक्रम जैसे ही श्रेष्ठ परिणाम देगा। सुपर-100 कार्यक्रम ने बता दिया है कि यदि राजकीय विद्यालयों के बच्चों को सही अवसर उपलब्ध करवाया जाए तो वे बच्चे सफलता हासिल कर सिर्फ राज्य में नहीं पूरे भारत में एक मिसाल बनेंगे और दिखा पाएँगे कि एक सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी में भी बहुत काबिलियत होती है। बस जरूरत है उन्हें थोड़ा तराशने की। विद्यार्थियों को सही राह दिखाने की एवं उनको तराशने में प्रधानाचार्यों और शिक्षकों की भी अहम भूमिका रहेगी।

नीरज
अतिरिक्त उपायुक्त, हिसार

शुरू किया गया है।

अतिरिक्त सुविधाएँ -

मिशन बुनियाद प्रोग्राम के दौरान प्रतियोगिता वाला वातावरण और उच्च कोटि की शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ अन्य कई सुविधाएँ मुहैया कराई जाती हैं, जो इस प्रकार हैं -

ट्रैवल अलाउंस- हरियाणा सरकार एवं शिक्षा विभाग विद्यार्थियों को हर संभव सुविधा मुहैया कराने के लिए तत्पर रहता है। विद्यार्थियों पर सैटेलाइट सेंटर तक आने-जाने के लिए कोई आर्थिक बोझ न पड़े, इसके लिए उन्हें 4 रुपये प्रति किलोमीटर की दर से यात्रा -भत्ता भी दिया जाता है।

यूनिफॉर्म- सभी मिशन बुनियाद विद्यार्थियों को शिक्षा विभाग द्वारा सर्दी एवं गर्मी दोनों मौसम के हिसाब से वर्दी भी प्रदान की जाती है।

टैब- इस प्रोग्राम के दौरान सभी विद्यार्थियों को टैब भी प्रदान किए जाते है, जिसमें सिम की सुविधा होती है, जिसके माध्यम से इन बच्चों को हर दिन 2 जीबी इंटरनेट डाटा दिया जाता है। इन टैब के माध्यम से विद्यार्थी मिशन बुनियाद की ऐप्लीकेशन का इस्तेमाल करते हुए ऑनलाइन क्लास में भाग ले सकते हैं। इस ऐप्लीकेशन के द्वारा विद्यार्थी अपने किसी भी प्रकार के सवाल का जवाब अपने प्रश्न को लिखकर या बोलकर पा

सकते हैं। इन सभी विद्यार्थियों की अकादमी प्रदर्शन का ब्यौरा भी इस ऐप्लीकेशन में उपलब्ध है।

अन्य आवश्यक सूचना-

शैक्षणिक वर्ष 2022-2023 में नामांकित विद्यार्थी अपने प्रथम वर्ष के अंत यानि 2023 में जबकि वे कक्षा 10 वीं के विद्यार्थी होंगे, एक परीक्षा में हिस्सा लेंगे जिनमें से टॉप 400 विद्यार्थियों को हॉस्टल में भेजा जाएगा, जहाँ उनको हॉस्टल में रहते हुए पढ़ाई जारी रखनी होगी। इन 400 विद्यार्थियों के अलावा बाकी सभी विद्यार्थी जो परीक्षा

सही मार्गदर्शन से होगा करियर की सही दिशा का चुनाव

प्रदेश में 'सुपर-100' कार्यक्रम ने तो सफलता के झंडे गाड़े ही हैं, अब विभाग ने 'मिशन बुनियाद' के साथ एक नयी शुरुआत की है। 'बुनियाद कार्यक्रम' बिल्कुल ही एक नई योजना और सोच के साथ शुरू किया गया है, जहाँ आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित कक्षा-कक्षों में बैठ कर विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। ये एक क्रांतिकारी परिवर्तन कहा जा सकता है, क्योंकि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए इन सुविधाओं की कल्पना करना बहुत मुश्किल था। विकल्प फाउंडेशन के सुपर-100 कार्यक्रम में अध्यापकों का बच्चों से जो जुड़ाव हैं, वह बहुत गहरा व मज़बूत है। यहाँ उन्हें किताबी ज्ञान ही नहीं दिया जा रहा, बल्कि जीवन का पाठ भी पढ़ाया जा रहा है।

दरअसल इस कार्यक्रम के पीछे सरकार की यही परिकल्पना है कि प्रतिभा विकास के मार्ग में आर्थिक अभावों को आड़े न आने दिया जाये। पहले सुपर-100 कार्यक्रम से यह परिकल्पना धरातल पर उतरती नज़र आई है, अब 'मिशन बुनियाद' के जरिये इसे और मज़बूती मिलने जा रही है। हमारा जिला प्रशासन भी इस मामले में सरकार तथा कार्यक्रम को पूरी मदद करेगा। नूँह जिले के बच्चों को प्रेरित करने हेतु हम उनके लिए करियर काउंसलिंग की भी व्यवस्था करेंगे, क्योंकि बच्चों के लिए ये निर्धारित करना बहुत ही मुश्किल होता है कि उनको भविष्य में क्या बनना है। हम सभी मिलकर 'मिशन बुनियाद' के साथ काम करेंगे और बच्चों को सही राह दिखाएँगे, ताकि उनको अपने जीवन में सही मार्गदर्शन न मिलने के कारण संघर्ष न करना पड़े और वे प्रगति की डोर को एक ही दिशा में आगे ले जा पाएँ।

आनंद कुमार शर्मा
पूर्व अतिरिक्त उपायुक्त, नूँह

में पास होंगे, वे अपनी पढ़ाई सैटेलाइट सेंटर के माध्यम से जारी रख सकेंगे। इसके अलावा वे सभी विद्यार्थी जो किसी कारणवश परीक्षा पास नहीं कर पाएँगे, उनका दाखिला रद्द कर दिया जाएगा।

दो वर्षों के पश्चात वे सभी विद्यार्थी जो इन दोनों शैक्षणिक वर्षों के दौरान ली गई परीक्षाओं को सफलतापूर्वक पार करते हैं, उनका दाखिला सुपर-100 में किया जाता है, जहाँ उनकी स्कूली पाठ्यक्रम के साथ साथ आईआईटी तथा एम्स जैसी परीक्षाओं की तैयारी करवाई जाती है।

सहायक निदेशक
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

मिशन बुनियादः प्रबंधन टीम, कार्य प्रणाली एवं प्रक्रिया

कामाक्षी शर्मा

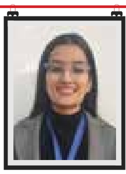

'मिशन बुनियाद' एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रोग्राम है जो कि सरकारी शिक्षा के क्षेत्र में एक वरदान के रूप में काम करेगा और इस प्रोग्राम में नामांकित कई विद्यार्थियों के भविष्य को उजागर करने में सहयोग करेगा। इसीलिए यह अत्यावश्यक था कि इस पूरे प्रोग्राम को बहुत ही सुचारु रूप से संचालित किया जाए।

जहाँ एक ओर ये अत्यंत महत्वपूर्ण है कि इसमें नामांकित विद्यार्थियों के साथ ज़मीनी तौर पर एक रिश्ता कायम किया जाए, वहीं यह सुनिश्चित करना भी बहुत महत्वपूर्ण है कि मिशन बुनियाद से संबंधित हर एक प्रक्रिया का बहुत ही ध्यानपूर्वक क्रियान्वयन किया जाए और इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए, गुरुग्राम जिले में प्रबंधन संचालक के नेतृत्व में एक टीम स्थापित की गई है जो ज़मीनी स्तर पर इस प्रोग्राम से जुड़ी है एवं इस प्रोग्राम की हर प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाने हेतु हर तरह की तकनीकी सुविधाओं से लैस है।

इस टीम में कई स्तर पर टीम मेंम्बर्स कार्यरत हैं, जिनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यप्रभारियों का उल्लेख नीचे किया गया है-

प्रेसीडेंट-

मिशन बुनियाद प्रोग्राम की शुरुआत श्री नवीन मिश्रा के नेतृत्व में की गई थी। किसी भी प्रोग्राम की सफलता के लिए यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि उस प्रोग्राम से संबंधित मुख्य अधिकारी पूर्ण रूप से उस प्रोग्राम से जुड़ा हो। मिशन बुनियाद एक ऐसा प्रोग्राम है जो हर उस विद्यार्थी को किसी भी भौतिक उपलब्धियों के आधार पर भेदभाव न करते हुए एक ऐसा शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराता है जिसमें वह निश्चिंतता के साथ अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे सके। क्योंकि श्री नवीन मिश्रा खुद ऐसी काफी चुनौतियों का सामना करते हुए निजी जीवन में आगे बढ़े हैं, वे मिशन बुनियाद से जुड़े हर एक विद्यार्थी में अपनी झलक देखते हैं। वे भरसक प्रयास करते हैं कि इस प्रोग्राम के माध्यम से हर विद्यार्थी को वे सारी संभव सुविधाएँ दी जा सकें जिससे विद्यार्थी केवल अपनी पढ़ाई पर ध्यान लगाते हुए अपने भविष्य को सुधारने के लिए जी-जान से जुट जायें।

प्रोग्राम निदेशक-

प्रोग्राम निदेशक का कार्य इस प्रोग्राम की दिशा को

निर्देशित करना है। यह विकल्प फाउंडेशन एवं शिक्षा विभाग के बीच वार्तालाप जारी रखते हुए और तालमेल बैठाते हुए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इनके द्वारा प्रोग्राम से संबंधित महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हुए दिशा-निर्देश जारी किए जाते हैं, जिनके तहत मिशन बुनियाद कार्य करता है।

प्रबंधन संचालक-

प्रबंधन संचालक एक ऐसा व्यक्ति है जो ज़मीनी स्तर पर प्रोग्राम निदेशक के द्वारा दिए हुए दिशा निर्देशों का सुभीते से पालन करवाता है। प्रबंधन संचालक अपनी टीम, जिसमें विभिन्न कार्यों को अंजाम देने के लिए विभिन्न प्रकार के लोग जुड़े हो सकते हैं, उनके साथ तालमेल करते हुए कार्य करते हैं। प्रबंधन संचालक को यह सुनिश्चित करना होता है कि संगठन में उपलब्ध श्रम एवं प्रौद्योगिकी का उचित रूप से अधिकतम उपयोग

अभिभावकों का भावात्मक सहयोग आवश्यक

'मिशन बुनियाद' सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं है, यह बुनियाद है विद्यार्थियों के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए। हम आज जो मेहनत कर रहे हैं, उसका फल हमें आने वाले समय में देखने को मिलेगा। मैंने ज़िंदगी में बहुत सी परेशानियों का सामना किया है, असफलता भी मिली, परन्तु पीछे मेरे माता-पिता खड़े थे। उन्होंने सदैव कहा कि हिम्मत नहीं हारनी है, अब नहीं तो अगली बार सही, आप कोशिश करते जाओ। और आज मेरा मानना है कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। इसलिए इस बुनियाद कार्यक्रम में जितने बच्चे हैं, सभी सोच लो, यह जो रास्ता है, यह रास्ता चुनौतियों से भरा होगा, लेकिन अगर हम ठान लें मंजिल हासिल करने की, तो दुनिया की कोई भी ताकत हमें रोक नहीं सकती। हमें अक्सर यह सुनने को मिलता है कि सरकारी स्कूल के बच्चों को प्राइवेट स्कूल की तुलना में बहुत कम अवसर मिलता है, पर मिशन बुनियाद एक ऐसा कार्यक्रम है, जहाँ सरकार और विकल्प फाउंडेशन मिल कर इस अंतर को खत्म करने मे दिन-रात लगे हुए हैं, ताकि सरकारी स्कूल के बच्चों को भी ज्यादा से ज्यादा अवसर व सुविधायें मिलें। इसलिए बच्चो, आप इस अवसर को जाने मत देना। मेहनत करो और खुद के साथ इस कार्यक्रम को भी सफल बनाओ। आप जब सफल होते हो तो यह सफलता सिर्फ आपकी नहीं, आपके माता-पिता, परिवार, आपके गाँव तथा इस देश की होती है।

मैं अभिभावकों को कहना चाहूँगी कि आपके बच्चों का आर्थिक दायित्व तो सरकार ने इस कार्यक्रम के जरिए अपने कंधों पर ले ही लिया है, अब आपको बस अपने बच्चों को भावात्मक सहयोग देना पड़ेगा, आपको उनके साथ सदैव खड़े रहना पड़ेगा। क्योंकि बच्चों के लिए माता-पिता का भावात्मक सहयोग उनकी प्रगति का वह सहारा है जो उन्हें कभी थकने और रुकने का मौका नहीं देगा। मैं आशा करती हूँ कि इस कार्यक्रम के जरिये ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी आगे बढ़ें और जीवन में सफल बनें।

शशि वसुंधरा
एसडीएम, पलवल

सपनों को पंख लगे

'मिशन बुनियाद' हरियाणा सरकार के द्वारा शुरू किया गया एक बहुत ही महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम है। सरकार ने शिक्षा के उन्नयन हेतु सुपर-100 के बाद अब मिशन बुनियाद कार्यक्रम की शुरुआत की है। सुपर-100 कार्यक्रम ने बहुत सारे बच्चों को नई राह दिखाई है, वे आज देश के प्रसिद्ध संस्थानों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए यह कार्यक्रम एक वरदान सरीखा है। सुपर-100 कार्यक्रम ने उनके उस सपने को साकार किया है जिसे वे कभी सोच भी नहीं सकते थे। मुझे आशा है कि मिशन बुनियाद भी बच्चों को एक ऐसी नयी राह पर पहुँचायेगा, जहाँ उनके सपनों को पंख मिलेंगे। इस कार्यक्रम के माध्यम से उन्हें हर वह अवसर मिलेगा जो उनके सपनों की उड़ान को भरने के लिए जरूरी हो। इस कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों को खुद की एक पहचान बनाने का मौका मिलेगा। मैं एक बार नवीन जी से मिली थी और बहुत ही प्रभावित हुई थी। उनके मन में प्रतिभाओं को निखारने का जो संकल्प है, उसने मुझे इस बुनियाद कार्यक्रम को लेकर और ज्यादा भरोसा दिलाया। इस कार्यक्रम में हमारे जिले के सभी शिक्षक तथा कार्यकर्ता अपना निःस्वार्थ योगदान देंगे।

कृष्णा फोगाट
जिला शिक्षा अधिकारी, चरखी दादरी

किया जा सके।

अध्यापक-

जहाँ एक ओर मिशन बुनियाद का मुख्य उद्देश्य इसमें पढ़ रहे विद्यार्थियों को अव्वल दर्जे की शिक्षा मुहैया करवाना है, वहीं यह सुनिश्चित करना भी काफी आवश्यक है कि इन विद्यार्थियों की पढ़ाई में रुचि जागृत की जा सके एवं उनका अध्यापक के साथ एक अच्छा रिश्ता कायम हो सके। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए आईआईटी एवं एनआईटी जैसे प्रख्यात संस्थानों से शिक्षा प्राप्त कर चुके अध्यापकों का चुनाव किया गया जो न केवल अकादमिक तौर पर प्रशिक्षित थे, बल्कि आज के दौर की हर तकनीक से भली भाँति वाकिफ थे।

स्टूडेंट को-ऑर्डिनेटर कम काउंसिलर-

इस समूह में मनोविज्ञान के विशेषज्ञ शिक्षक शामिल हैं। इनका कार्य काफी महत्त्वपूर्ण है। इनके कार्यों में मिशन बुनियाद के विद्यार्थियों के विवरणों का लेखा-जोखा रखना, विद्यार्थियों से नियमित रूप से संपर्क में रहना,

प्रतियोगिता से निखर रही है प्रतिभा

मेरा नाम आदित्य कसनीय है। मुझे एक विशेष कार्यक्रम मिशन बुनियाद में दाखिला मिला, जिससे मुझे एक नई पहचान मिली। यहाँ के शिक्षण में मुझे एक चीज़ बहुत रुचिकर लगती है। वह है- क्विज़ प्रतियोगिता। इस प्रतियोगिता में किन्हीं भी दो सेंटर्स को चुना जाता है और उनसे किसी भी एक विषय के बारे में पाँच से दस सवाल पूछे जाते हैं। जिसके कारण हम सभी बच्चों में एक उत्साह बना रहता है। इस छोटी सी प्रक्रिया से मुझे एक-एक करके केमिस्ट्री के हर मैथड और पाइवर टेबल ऐसे याद हो गया जैसे मैंने ही इसको बनाया है। मुझे इन क्लासेस से उम्मीद से ज्यादा मिला है। उसके बाद जिस भी टीम के ज्यादा पॉइंट्स होते हैं वो जीत जाता है, उन सभी बच्चों को फिर प्राइज भी मिलता हैं। यह सब डिजिटल स्क्रीन पर होता है। कई बार तो ऐसा लगता है जैसे मैं टीवी पर मैच देख रहा हूँ।

मैंने अपनी जिंदगी में न कभी भी ऐसा देखा था और न ही कभी ऐसा सोचा था कि ऐसी शिक्षा मुझे कभी मेरे स्कूल में मिलेगी। मुझे अत्यंत खुशी है कि मैं इस मिशन बुनियाद का एक शिक्षार्थी हूँ। हम सचमुच डिजिटल दौर में पहुँच रहे हैं। वही डिजिटल दौर जिसका सपना देश के आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी देखते हैं। मैं 'मिशन बुनियाद' को दिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ।

आदित्य कसनीय
सिरसा

उनके व्यवहार का सर्वेक्षण करना, उनकी परेशानियों का पता लगाकर उनका समाधान करना, उनका मिशन बुनियाद की सैटेलाइट कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित रहना सुनिश्चित करना, काउंसलिंग करना आदि हैं। इसके अलावा मिशन बुनियाद से संबंधित कोई भी जानकारी देना भी इनके कार्य में शामिल है। जिस भी आंतरिक समन्वय की आवश्यकता हो, चाहे वह अभिभावकों से हो, सैटेलाइट क्लास में उपस्थित एबीआरसी से हो या शिक्षा विभाग से जुड़े अन्य किसी भी व्यक्ति विशेष से हो, वह करना भी स्टूडेंट को-ऑर्डिनेटर के दायित्वों में सम्मिलित है।

ये सभी कार्य गुरुग्राम स्थित कार्यालय से किये जाते हैं। उसके साथ ही यह टीम फील्ड वर्क के लिए समय-समय पर कई तरह के सेमीनार का आयोजन भी करती है जो कि शिक्षाप्रद व जानकारीपूर्ण होते हैं।

सेंटर को-ऑर्डिनेटर-

सेंटर को-ऑर्डिनेटर का मुख्य कार्य यह देखना होता है कि ये क्लासेस सुचारु रूप से संचालित की जा सकें। इसके साथ-साथ ये यह भी सुनिश्चित करते हैं कि विद्यार्थियों को हो रही किसी भी प्रकार की समस्या का उचित रूप से समाधान किया जा सके। इसके साथ-साथ वे गुरुग्राम कार्यालय में मौजूद स्टूडेंट को-ऑर्डिनेटर के साथ समन्वय स्थापित करते हैं और हर वह संभव कोशिश करते हैं जिससे अधिक से अधिक विद्यार्थी प्रोग्राम से जुड़े रहें एवं मिशन बुनियाद के तहत अपनी शिक्षा जारी रख सकें।

सोशल मीडिया टीम-

ये एक ऐसी टीम है जो मिशन बुनियाद को न केवल हरियाणा राज्य, बल्कि पूरे भारतवर्ष के हर एक व्यक्ति तक पहुँचाना चाहती है और प्रचार-प्रसार का कार्य आज के इस तकनीकी युग के नये माध्यमें यथा फेसबुक, इंस्टाग्राम एवं यूट्यूब के द्वारा करती है। यह टीम हरियाणा राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर मिशन बुनियाद के विद्यार्थियों से मुलाकात करती हैं एवं उनके बारे में जानने की कोशिश करती है। उनकी सहमति से उनके विचारों को सोशल मीडिया के माध्यम से साझा करती है।

स्टूडेंट को-ऑर्डिनेटर
मिशन बुनियाद

मिशन बुनियाद

अक्षर-अक्षर सीढ़ी चढ़कर शब्दों को छू जायेंगे,
नए-नए वाक्य रोज़ रचकर खूब कहानियाँ बनायेंगे।

अंकों के दोस्त बनकर संख्याओं तक पहुँच जाएँगे,
नए-नए सवाल हल कर हाज़िर जवाब बन जायेंगे।

गपशप और बातचीत कर सोच का दायरा बढ़ाएँगे,
खेल-खेल में पढ़ाई कर रोज़ बहुत कुछ सीख जायेंगे।

नए-नए ढंग से पढ़कर बुनियाद मजबूत बनायेंगे,
वादा है एक दिन हम कामयाब होकर दिखायेंगे।

अब हर बच्चे की नींव को, मज़बूत हमें बनाना है,
बुनियादी शिक्षा से उनका, ज्ञान भी बढ़ाना है।

शिक्षा के परिवेश में, बदलाव हम लाएँगे,
बेसिक शिक्षा का सपना साकार हम कर जाएँगे।

हर शिक्षक प्रेरक होगा, प्रेरक होगा विद्यालय,
ज्ञान की फुलवारी से महकेगा अपना आलय।

बुनियादी शिक्षा से जब बच्चा लक्ष्य अपना पाएगा,
व्यावहारिक दुनिया में अपना ज्ञान वह बढ़ाएगा।

जन-जन तक अब पहुँचेगा मिशन का ये संदेश
आओ मिलकर हम बनायें हरियाणा सर्वश्रेष्ठ ।।

हर्षदीप
बुनियाद केंद्र- नरवाना
ज़िला जींद, हरियाणा

'मिशन बुनियाद' ने आँखों में भर दिये इन्द्रधनुषी सपने

'मिशन बुनियाद' से साधारण जन को अपने अनेक स्वप्नों को साकार करने का मौका दिया है। जींद जिले के सिंघवाल गाँव के बलजीत सिंह इस बात के लिए काफी हर्षित हैं कि उनका बेटा हर्ष 'मिशन बुनियाद' के अन्तर्गत शिक्षा ग्रहण कर रहा है। किराने की छोटी सी दुकान से आजीविका अर्जित करने वाले बलजीत सिंह इसके लिए सरकार की खूब जय-जयकार करते हैं। अपने पुत्र के भविष्य के बारे में अब वे काफी आश्वस्त नज़र आते हैं।

जिला सोनीपत के गाँव गढ़ी केसरी की पूजा भले ही लोगों के घरों में साफ-सफाई करके परिवार का खर्च चला रही हों, लेकिन जब से उनका छोटा बेटा आर्यन 'मिशन बुनियाद' के लिए चुना गया है, तब से अपने भाग्य से उन्हें कोई शिकायत नहीं रही। पति के स्वर्ग सिधारने के बाद कड़ी मशक्कत से वह परिवार का भरण-पोषण कर रही थीं। वे मानती हैं कि जब से आर्यन इस कार्यक्रम के तहत शिक्षा ग्रहण करने लगा है, तब से उसके व्यक्तित्व में ज़मीन-आसमान का अंतर आया है। उसका बेटा नेवी में ऑफिसर बनना चाहता है, उसे उम्मीद है कि अब उसका सपना अवश्य साकार होगा।

महक यादव के पिता राजेंद्र यादव और माता सलोचना ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं। इस कारण पिता हैल्पर की छोटी-सी नौकरी करते हैं। रेवाड़ी के बेरियावास ग्राम के निवासी राजेंद्र बताते हैं कि उनके जीवन में ऐसे हालात नहीं रहे कि वे पढ़ पाते, लेकिन अब अपनी संतान को वे उच्च शिक्षित करना चाहते हैं। जब से उनकी बेटी महक 'बुनियाद' के लिए चुनी गई है, तब से उनके सपनों को पंख लग गये हैं। उन्हें लगने लगा है कि उनकी बेटी उनके अधूरे सपनों को पूरा करेगी। उनकी पत्नी सलोचना ने जब बुनियाद की कक्षा में जाकर देखा कि किस प्रकार बच्चे आधुनिक तकनीक की मदद से पढ़ रहे हैं, तब से उसे लगने लगा है कि 'मिशन बुनियाद' साधारण परिवार के बच्चों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

टेलरिंग का काम करके परिवार का पेट भरने वाले सोनीपत जिले के पयाओ मिनयारी के राजेंद्र यादव की पुत्री ज्योति कुमारी जब से 'बुनियाद' का हिस्सा बनी है, तब से उनकी बेटी की पढ़ाई की सारी चिंता ही दूर हो गई है। इससे पहले वे बेहद चिंतित रहते थे, क्योंकि मात्र बारह-तेरह हज़ार की कमाई में अपने बेटे विपुल (कक्षा ग्यारहवीं) और बेटी ज्योति की शिक्षा जारी रखना बेहद मुश्किल था। अब राहें काफी आसान लगने लगी हैं। वे प्रदेश सरकार का बार-बार धन्यवाद करते हैं।

गाँव खर्बला, जिला-हिसार के संजय भले ही पेशे से मज़दूर हैं, लेकिन अपने दोनों बेटों की शिक्षा के मामले में ये बहुत गंभीर हैं। उस दिन इनका और इनकी पत्नी उर्मिला की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, जब इन्हें पता चला कि इनका बेटा समीर 'मिशन बुनियाद' का हिस्सा बन गया है। हालांकि इस कार्यक्रम के बारे में उन्हें पहले कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन ओरिएंटेशन के दिन इन्हें समझ आया कि इस कार्यक्रम का हिस्सा बने बच्चों का भविष्य काफी उज्ज्वल है। अब उनकी प्रसन्नता छिपाये नहीं छिपती।

जिला यमुनानगर के गाँव शादीपुर के निवासी मंजय इस बात के लिए अपने भाग्य की सराहना करते नहीं थकते कि उनका बेटा हिमांशु 'मिशन बुनियाद' के तहत शिक्षा ग्रहण कर रहा है। एक प्लाईवुड कंपनी में फिनिशर का काम करने वाले मंजय को उम्मीद है कि अब उनका बेटा अवश्य उनके सपनों को साकार करते हुए उनका नाम रोशन करेगा।

डॉ.प्रदीप राठौर
drpradeeprathore@gmail.com

माता-पिता होते हैं प्रथम गुरु

जब बच्चा जन्म लेता है तो उसके लिए सबसे पहला विद्यालय घर होता है तथा माता-पिता प्रथम गुरु हैं। उसके सर्वांगीण विकास के लिए घर के वातावरण का बच्चे पर काफी प्रभाव पड़ता है। परिवार के द्वारा दिये गये संस्कारों पर उसका सारा जीवन निर्वाह होता है।

माँ-बाप का विश्वास, स्नेह, बच्चे के सीखने की प्रक्रिया व मनोबल को ऊँचा करने में सहायक है, बोल-चाल, व्यवहार उसकी सारी दुनिया बदल सकता है। जब बच्चा अपने आपको पहचानने लगता है तो उसके शिक्षण का दूसरा चरण शुरू होता है, जहाँ पर वह अपने सहपाठियों के साथ जीवन में आगे बढ़ने की बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ अन्य कौशल सीखता है। यहाँ पर माता-पिता के साथ-साथ अभिभावक के रूप में नई भूमिका शुरू हो जाती है। आप एक अभिभावक के रूप में कितने जागरूक हैं ? उसके जीवन का आधार इसी पर निर्भर करता है। विद्यालय उपरान्त ज़्यादातर समय वह आपके साथ बिताता है इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि उनके प्रति व्यवहार व संवाद कैसा है? यदि आपका व्यवहार व संवाद प्रेरणादायी, प्रताड़नामुक्त व स्नेही होगा तो बच्चे पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। कभी भी उसकी तुलना दूसरे बच्चों से न करें, उसे स्वयं की उपलब्धियों का स्मरण करायें। त्रुटियों को एक बार बताना ही पर्याप्त है। पढ़ाई के साथ-साथ रुचि अनुसार खेल आदि पर ध्यान दें ताकि बौद्धिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास भी हो। बच्चे से अपेक्षा रखना तो ठीक है पर बार-बार जताने से दबाव बढ़ता है। उसने प्रयत्न कितना किया इसको महत्त्व दें, न कि परिणाम को। कई बार परिणाम आशा व मेहनत अनुसार नहीं भी आये, तो उसे प्रोत्साहित करें। हमेशा बच्चे के साथ मित्रतापूर्ण व सहयोगी आचरण रखें। उसे विचार प्रकट करने की आज़ादी दें एवं सकारात्मक (रचनात्मक) सलाह दें। पूर्ण तैयार समाधान देना उचित नहीं है। उसे स्वयं अपने स्वभाव व अभिरुचि अनुसार लक्ष्य निर्धारित करने दें। आज के युग में बच्चों के जीवन जीने की शैली में बहुत बदलाव आये हैं। इसलिए बच्चे को अच्छे संस्कार दें। बाल्यावस्था से संस्कारों का महत्त्व है और उनका प्रभाव उसकी बोल-चाल, बड़े-छोटे की पहचान, माता-पिता के साथ-साथ गुरुजन के आदर-सत्कार के रूप में दिखेगा। जिन बच्चों में अच्छे संस्कारों की कमी होती है उनके भटकने की ज्यादा सम्भावना होती है। इसलिए आप एक अभिभावक के रूप में अपने आपको किस प्रकार प्रस्तुत करते हैं, उसके भविष्य निर्माण पर काफी हद तक निर्भर करता है। आप वैज्ञानिकता से यह मानकर चलें। आपने अभिभावक के रूप में यदि यह परीक्षा पास कर ली तो आपके बच्चे का भविष्य उज्ज्वल होगा। वह एक अच्छे व्यक्तित्व का धनी होगा। साथ-साथ एक अच्छा नागरिक व देश की उन्नति में भागीदार सिद्ध होगा और आप एक सफल अभिभावक के रूप में पहचाने जायेंगे।

जयवीर सिंह
मुख्याध्यापक मौलिक
रावमा विद्यालय बिघाणा, जिला- जींद

2023

जनवरी-फरवरी माह के त्यौहार व विशेष दिवस

5 जनवरी-	गुरु गोबिंद सिंह जयंती
9 जनवरी-	प्रवासी भारतीय दिवस
11 जनवरी-	लाल बहादुर शास्त्री पुण्यतिथि
12 जनवरी-	राष्ट्रीय युवा दिवस, स्वामी विवेकानंद जयंती
13 जनवरी-	लोहड़ी
23 जनवरी-	नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जयंती
24 जनवरी-	राष्ट्रीय बालिका दिवस,
25 जनवरी-	राष्ट्रीय पर्यटन दिवस
26 जनवरी-	गणतंत्र दिवस
28 जनवरी-	लाला लाजपतराय जयंती
4 फरवरी-	विश्व कैंसर दिवस
5 फरवरी-	गुरु रविदास जयंती
15 फरवरी-	महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती
18 फरवरी-	महाशिवरात्रि
21 फरवरी-	अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
28 फरवरी-	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

'Mathsticks' A monthly Maths Letter for teachers: an initiative by SCERT, Haryana

NEP, 2020 has envisioned connecting mathematics with the upcoming fields that are important to work in future professions, and National position paper of Mathematics, 2006 has highlighted the importance of Mathematical processes such as Pattern seeking, Problem-solving, problem posing, Visualization, Representations, Mathematical Communication, Mathematical Creativity, making connections, Use of Heuristics, Estimation and Approximation, Optimization, Reasoning, and Convincing, Proof and Proving, that needs to be developed among children for doing Mathematics. Further, we know from the Mathematics education research that how to make the teaching and learning process of Mathematics engaging and productive.

Despite such recommendations and available research for many years, there is hardly any change in the pedagogy and understanding of teachers in relation to Mathematics. Teachers are used to the conventional 3x approach, i.e., explain first, then give an example followed by doing similar exercises. This approach might be followed because of the teachers' conceptions of the nature and goals of Mathematics and the way they were taught Mathematics in their schooling. The image of Mathematics prevailing in the society is its unidimensional character, with a set of procedures and facts and having one right way and one correct answer. The way Mathematicians see Math's is connected where exploring patterns, making conjectures, and making mistakes are essential parts of doing Mathematics. Hence, there is need to make new research and evidence-based teaching and learning accessible to the teachers as well as on field support to implement innovative and new practices.

In order to inspire, educate and empower teachers of Mathematics, transforming the latest research on Math's learning into accessible and practical forms, related material, messages, experiences must be shared in the field on regular basis. Hence, Mathematics Education Department has initiated to publish monthly e- Math's letter of 3-5 pages. We have envisioned that each issue would comprise of important research articles in simple language, open ended problems/ tasks/ teachers' reflections and experiences of her own classroom teaching and learning, Topic Specific Pedagogical Content Knowledge trajectories.

The first issue of the Monthly Math's e-letter dedicated to Primary and elementary school teachers was released on Teachers' Day (5th September 2022) with a key message from the Worthy Director, Mr.Vivek

Kalia, SCERT, Haryana to motivate the teachers and to implement the ideas in their classrooms. We hope that such initiative is the need of the hour and would help in changing the mindsets of teachers and make them comfortable in adopting the latest practices. To come up with the final version, a sample of teachers from the field reviewed the letter critically and provided their feedback. The task given in the letter was also tried in four Math's Classrooms and an overwhelming response was received. To reflect and implement the ideas in their pedagogy, BRP and ABRCs who are connected with the Math's department through online weekly sessions would observe and encourage teachers to read and discuss the ideas given in the Math's Newsletter. YouTube live session was also be held for the teachers to orient regarding the structure and agenda of the Math's e-Newsletter.

Links and QR code of the e-Math's letters.

https://drive.google.com/drive/folders/1wm5d41Vv0Cp-chifdHI4HMQTwCJ47umq?usp=share_link

Dr. Jasneet Kaur
Mathematics Department
SCERT Haryana, Gurugram

Puppy's Kisses

I do miss
My puppy's kisses.
He's all grown now,
And somehow,
I still remember,
Last cold December.
His cold nose,
Upon my cold toes.
Seeking warmth and love,
Would snuggle up,
His soft fluffy face,
Would my cheeks grace.
Leaving mud streaks and dirt,
But all of it was worth.
His fluffy greetings,
All soft, warm and sweet,
Now all whiskers and brows,
But still these sloppy kisses
Are the best in my world somehow.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Our own Heart- Warehouse of Peace & Happiness

Dr. Himanshu Garg

Why not dedicate this new year to simply loving yourself more? This little gesture can make our own life beautiful and the life of other people also stress free. Because our own behaviour affects the whole society. A man wanders across the length and breadth of the universe to find peace and happiness. Eventually these are really our own state of mind. Any place, person or thing cannot give us these divine feelings. Our own heart is the warehouse of all these feelings.

Being a Weekend, there was a great rush on a Tea shop. So the owner of the tea shop had been busy throughout the day. He had been on his toes since morning. Towards the evening he had a splitting headache. As the clock ticked away, his headache worsened. When the headache became unbearable, he stepped out of the shop leaving his staff to look after the sales. He walked across the street to the Chemist and bought a painkiller to relieve himself. He swallowed the pill and felt relieved. He knew that in a few minutes he would feel better. As he strolled out of the shop, he casually asked the salesgirl, "Where is the Chemist (the owner of this shop)" ? He is not at the cash counter today!" The answer was really thought provoking. The girl replied, "Sir, He had an unbearable headache today. So he was going across to the Tea shop. He said," A cup of Ginger Tea would relieve his headache." The man was really surprised with the answer. The chemist relieves his headache by drinking Tea and the tea shop owner finds relief in a pain relieving pill !

We all are following the same nature. We are looking outside ourselves for something that we have within us. How strange but true !

Deer follows the fragrance of Kasturi and wanders here and there throughout his whole life to find it. But in reality, deer had it inside its own body. Man undertakes many pilgrimage to find God. Eventually God dwells within his heart. So rather than searching for happiness and peace outside, we should find it inside ourselves.

Assistant Professor,
Govt. College for Women, Jind
himanshujind@yahoo.com

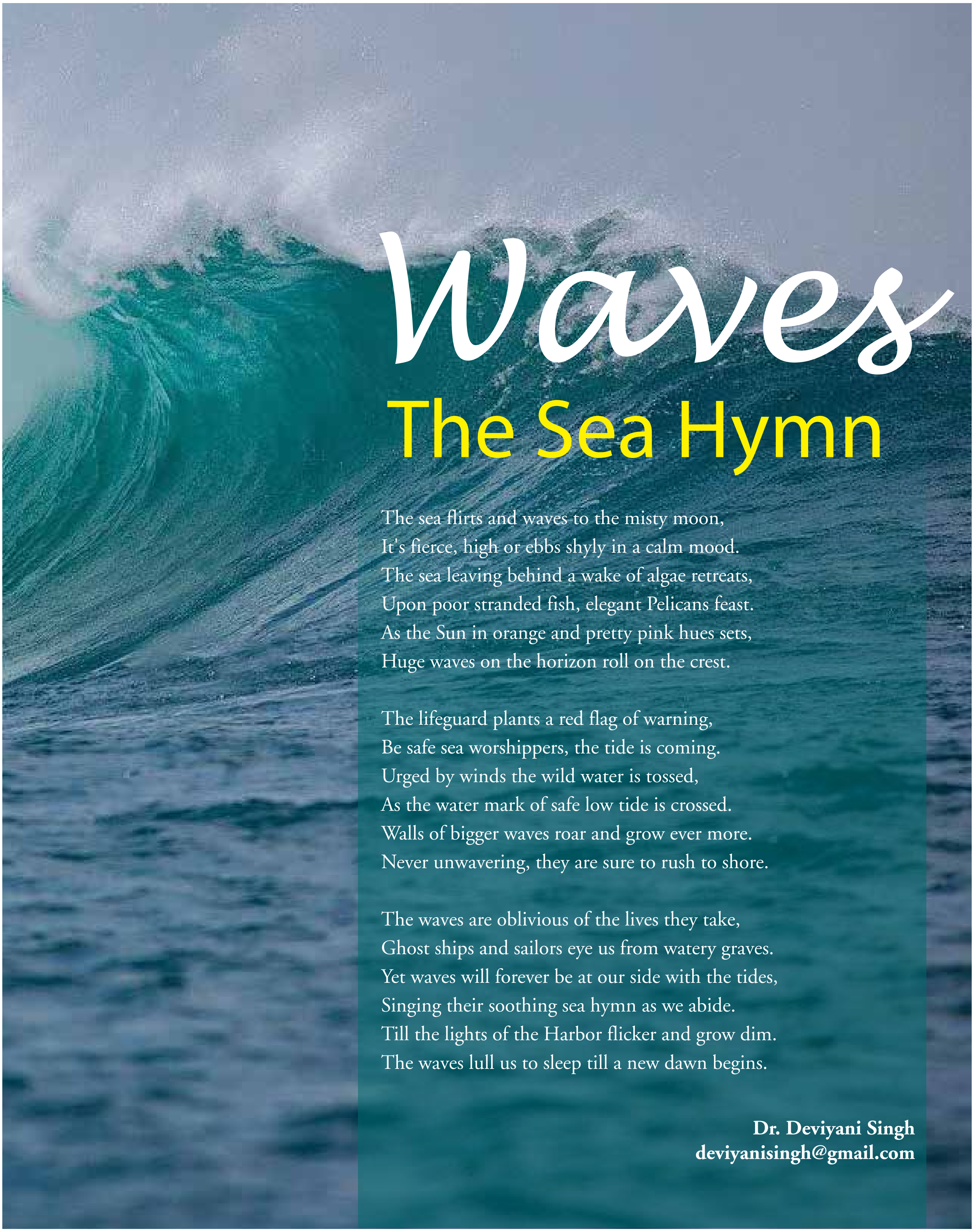

Waves

The Sea Hymn

The sea flirts and waves to the misty moon,
It's fierce, high or ebbs shyly in a calm mood.
The sea leaving behind a wake of algae retreats,
Upon poor stranded fish, elegant Pelicans feast.
As the Sun in orange and pretty pink hues sets,
Huge waves on the horizon roll on the crest.

The lifeguard plants a red flag of warning,
Be safe sea worshippers, the tide is coming.
Urged by winds the wild water is tossed,
As the water mark of safe low tide is crossed.
Walls of bigger waves roar and grow ever more.
Never unwavering, they are sure to rush to shore.

The waves are oblivious of the lives they take,
Ghost ships and sailors eye us from watery graves.
Yet waves will forever be at our side with the tides,
Singing their soothing sea hymn as we abide.
Till the lights of the Harbor flicker and grow dim.
The waves lull us to sleep till a new dawn begins.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

SOCIO-EMOTIONAL LEARNING

An Integral Aspect of Holistic Education

Babita Yadav

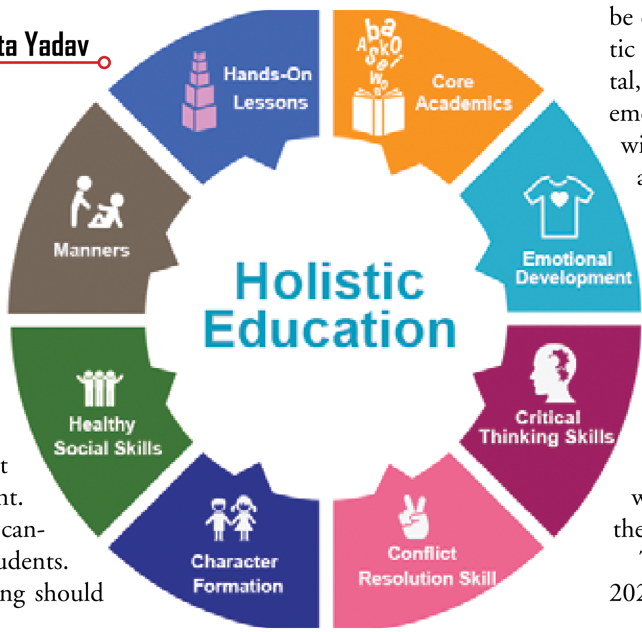

The true aim of education has always been holistic development of the child. Holistic development is a broad concept that focuses on all aspects of a child's growth and not just the academic achievement. Academic excellence alone cannot assure success to the students. The child's overall well being should be established by education. Holistic development includes the mental, intellectual, physical, social and emotional growth of a child. People with strong socio-emotional skills are better able to cope with difficult and challenging situations and excel academically and socially. SEL (Socio-Emotional Learning) provides a foundation for self-discipline, problem-solving and emotion management. But the social and emotional growth of a student has not been given due weightage so far as compared to the other aspects of holistic growth.

The National Education Policy, 2020 has included Socio-Emotional

Learning as a key tool for the education system to "develop good human beings capable of rational thought and action, possessing compassion and empathy". The objective behind this is that education should be able to produce socially responsible and emotionally stable citizens. COVID-19 pandemic led to an era of social distancing and online mode of teaching-learning which had a negative impact on the social and emotional well being of school students. This situation left the students in a stressed, nervous and bewildered state.

The need for all children in Haryana to get a safe space in the schools to improve their social and emotional skills has been duly recognised by worthy State Project Director, Haryana School Shiksha Pariyojna Parishad. In collaboration with the Anubhuti Organization, Haryana School Shiksha Pariyojna Parishad has organised two day district level orientation programmes in all the districts to train Master Trainers who have further been assigned the duty to train all the teachers of their respective blocks. Every teacher whether PRT, TGT or PGT has been given two days training on Safety and Security of School Students and Socio-Emotional Learning. The objective of this training is to make the teachers aware of the concept of safe space, need of SEL under safety and security and how to integrate SEL in classroom practices. Through various group activities like role play, group discussions etc. the teachers are trained how to develop five basic competencies of holistic development in school children viz. self awareness, social awareness, self management, responsible decision-making and relationship management. These competencies can be developed in the students by adopting various strategies discussed during the orientation programme. A teacher should know the students. He should communicate with the parents of the students so that he may be aware of his family circumstances and treat the students accordingly. Social and emotional attitude of the taught should be known to the teacher. Group activities in the class, outdoor activities and role play activities lead to better relationship building between teacher and student and peers also resulting in better development of socio-economic skills.

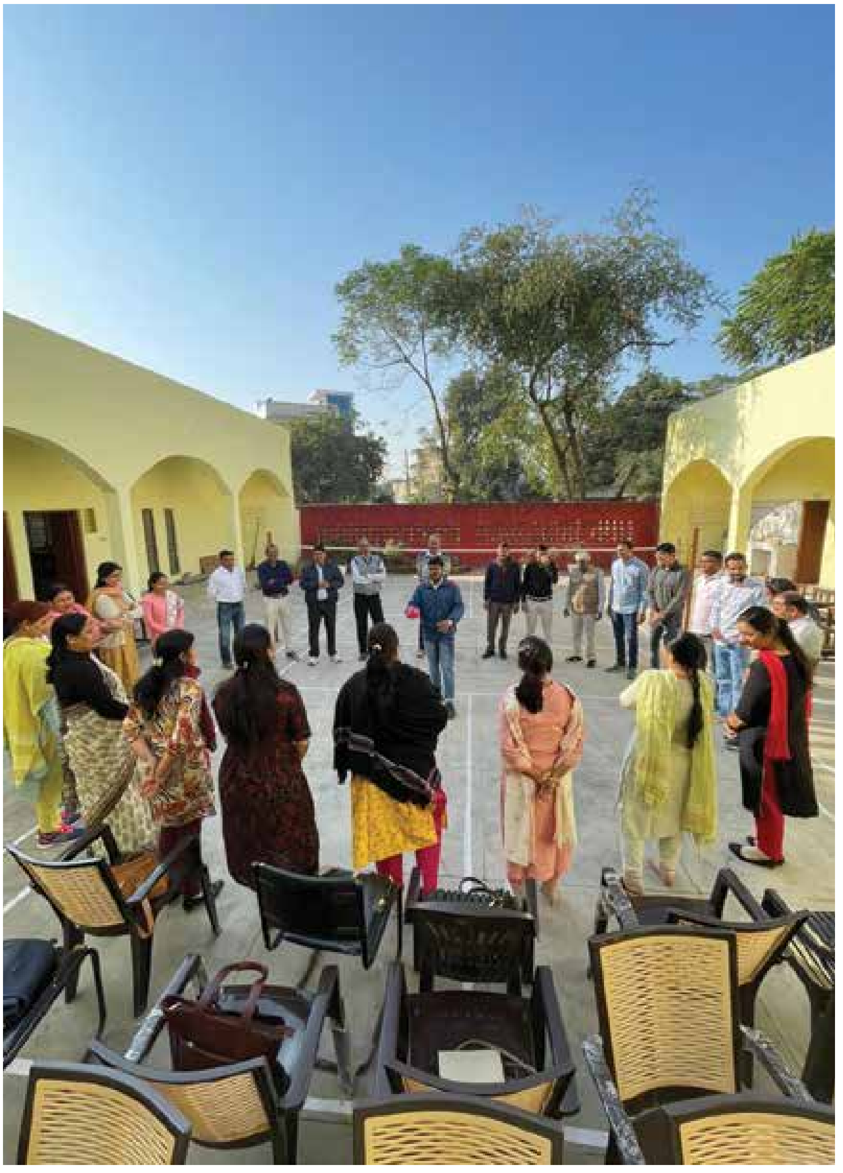

By developing socio-emotional skills, the students will be able to solve problems, think critically and take right decisions. They will be able to achieve individual justice as well as social justice which is the aim of education according to the great philosopher, Plato.

PGT English
GSSS Rewari, Haryana

Ethics and Values

Smt. Rupam Jha

"We are all born as empty vessels which can be shaped by moral values"

Jerry Springer

The title itself needs no introduction. Such is the need today and everyday to revisit this space. Inculcating values early in life goes a long way in good governance of Society.

Ethics is the norm laid out by Society, not written but appealing to the conscience. It is what should be rather than what is and do help frame our value system. These ethics stay with us for life.

The socialisation process starts at the time of birth. Beyond physical attributes with which a child is born with, society takes over the process of socialisation. Right from the beginning, the young one is told the difference between right and wrong.

So values are part of our socialisation ethics. One is taught what is right and what is wrong right from the beginning. Ethics is a set of moral principles and values. This brings out the fundamental goodness among people, an attribute for appropriate behaviour. It helps us interpret what is right and what is wrong.

Different societies may have a different set of values but values everywhere help one comprehend what is right and what is wrong. There are long term gains in in being ethical and following the values laid down by society. One follows the standards set by values of society and adopts these values as our own.

Not just Philosophical but practical

too is the set of values and ethics. Ethics are consistent but values may differ. Values determine what an individual wants to achieve whereas ethics sets standards for it and how to proceed further. Achievements are values but unethical means to gain them may not be correct.

In the traditional Indian value system, there are the three types of Gunas. What is noteworthy is in which proportion, which each Guna is to be present in an individual. The three qualities are Sattva, Rajas and Tamas. The balancing act of the three helps in enhancing correct values. Rajas for passion and aggression, to achieve. Sattva for peace, harmony and knowledge. Tamas for darkness and inertia, a state where one has to be careful in. All three are important and present in the life of an individual. The Rajas guna helps you to get ahead in life and to fulfil your aspirations. Tamas to tell you that you are wrong. Sattva does the balancing act. When Sattva has more of an influence over an individual, then it can be said that correct values have been inculcated.

Values can be instilled by repetition. This in turn helps to build character as well as teaches the individual to accept responsibility and become answerable. Good upbringing involves the instilling good values.

Work ethics become important as Work is Worship. Conduct of a person is governed by the values and ethics inculcated at the nascent stage.

All values are present in humans, whether positive or negative but ethics help decide which values come forward.

Nowadays the Western world tries to incorporate our traditional Indian values. Unfortunately values are deteriorating in the same indigenous cradle of the land of origin. It is time to take corrective action and do the needful. Westernisation, as per Sociological understanding of the term given by Sh. M.N Srinivas, is just copying the Westerners. Modernisation is what we need, that is adopting science and technology without giving up our values.

Indian Knowledge System is a storehouse of knowledge, a repository of facts. Create values among the public, among the new generation to be able to appreciate and use this .Be it alternate system of medicine, wellness Yoga or life skills, all enhance the values present among people. The ripple effect will be the correct work ethic being promoted and inculcated.

Max Weber, an eminent Sociologist, does come to mind when we speak of values. His work "The Protestant Ethic and the Spirit of Capitalism "reflects how the correct work ethics brought about prosperity and progress to the Continent. Values have always been part of society and ethics help us recognise them. They play a very important role in nurturing our personalities and developing life skills. They are the foundation for a fruitful life. Intangible but a basic principle in human development.

Short cuts are fast becoming the norm and to counter this attitude, values and ethics play a part. Nowadays 21st century skills are to be developed among the new generation, experiential learning is getting a boost. We have to brace ourselves for the charms and challenges of modern life. Our values and ethics will stand with us.

"Ethics is knowing the difference between what you have a right to do and what is right to do." Peter Stewart

Subject Expert
SCERT Haryana, Gurugram

Soldier's Heart

Dr. Deviyani Singh

(This story has been shortlisted in the Annual Short Story Writing Competition 2022 of the Chandigarh Literary Society and published in their Anthology.)

She scanned the glitzy confines of the cafe, nervously. Except for new staff behind the counter, everything looked pretty much the same. Two momentous years had elapsed! He was predictably late, but was sure to saunter in any minute now, with that irresistible smile as his major adornment. But would their conversations ever be the same again? What if...the war had changed things?

Shivali was a helicopter pilot in charge of evacuations during the Kargil War. The chopper was hovering to pick up the wounded after a successful mission.The first light of dawn gleamed on the rotor blades as it landed in a lush green meadow surrounded by snow-capped peaks. Most of the wounded had boarded when there was a sudden burst of gunfire and shells. She saw her fiancé Shaurya running through a spray of bullets. He got delayed in picking up an injured soldier and couldn't reach the chopper in time. Shivali had been hit on her knee.She knew she could faint from blood loss any moment so she flew the rest to safety.

It was more than a year before she could walk again and the first thing she did was to go to their favourite Café. She smiled as he walked in, a lopsided grin lighting up his rugged features. She ran and jumped into his lap, tried to hang on to his shoulders and collapsed on the floor, laughing in delight.

"How have you been, Shaurya? I've been reading your emails again and again. Why didn't you message more often? I couldn't meet you but I felt your love all the time."

There was a sudden clattering sound, like staccato from a machine

gun. She splayed herself under the table, instincts sharpened by military training.

"Down quick,Take cover!"

"Sorry Ma'am,someone dropped a whole tray of cutlery..." The waiter frowned.

"Whew! ok, please just let us be alone, I will order soon."

She looked into Shaurya's dark brown eyes that reflected her love. She felt a deep connection, like two souls had united.

The waiter retreated into the shadows.

"So, honey should we order your favourite American Chop suey?"

She waved; the waiter came charging out from the swing doors like a greyhound waiting for his cue to race.

"One American Chop suey and two Virgin Mojitos." She returned the Menu Card.

A plate of Chop suey with a sunny-side-up egg was placed before her. She scrutinized the noodles with intensity. Were they moving? She squinted against the steam.She poked her fork in gingerly and out crawled a big fat worm!

"WAITERRR! Dd…did, you see that?It... it crawled off, must be around somewhere." Her eyes scanned the table. "Don't kill it, please just leave it on some plant."

He looked under the table, "There's nothing there, maybe the steam was playing tricks on your eyes, please calm down."

"Forgive me love, but I'm scared of slimy creatures. Reminds me of the trenches. The worms kept crawling all over me but I couldn't come out till the air raid was over."

She noticed the fried egg was not perfectly done. It had a small rupture where the yolk's fluid was running out of the membrane. Her eyes were rivet-

ed on it. They had picked up one of Shaurya's colleagues who was found unconscious in a ditch. His wounds were festering, covered with maggots and yellow pus oozed ... he died two days later, leaving Shaurya distraught.

She pushed the plate away, suddenly losing her appetite.

"Waiter, just bring me a plain salad?" A Saxophone played in the background.

She dug into the salad, chomping on a large lettuce leaf...green... her favourite colour, of the fresh mint sprig in the Mojito, uniforms and jungles. She tried to focus on eating.

"I missed you so much, like flowers longing for rain. You make me feel so alive. I waited for you, but no one, including my parents, understands you take time over things. You're a perfectionist."

She sucked on the straw in the Virgin Moji-to and stopped.

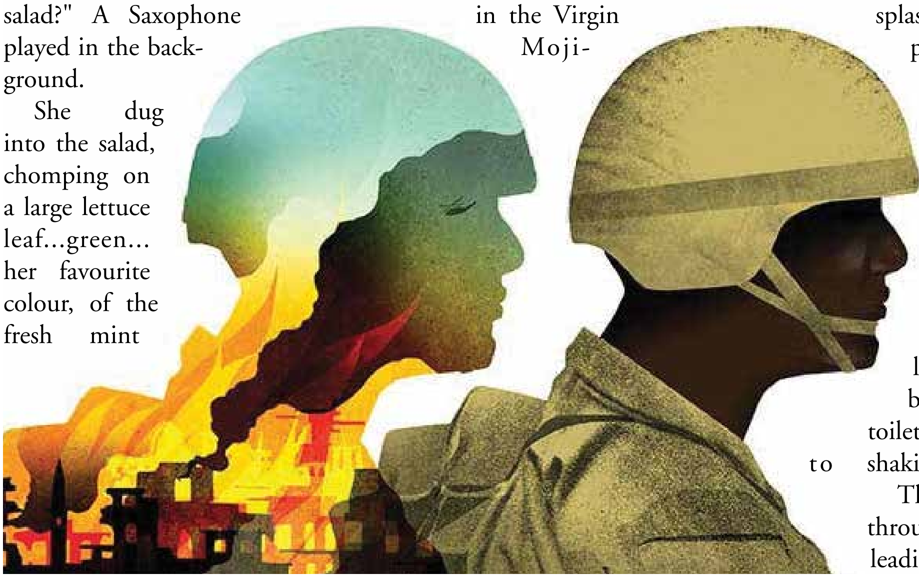

She had airlifted a soldier whose face was partially blown off by a grenade. Tubes were attached to his neck. His laboured breathing was eerie. Rasping, wheezing sounds seemed to echo off the metallic confines of the chopper.

She choked and spluttered, blowing huge bubbles into the drink. It splashed on her. Dark splotches expanded on the jade green brocade dress Shaurya had gifted her.

"Oh, I'm sorry honey, I'll just be back from the washroom."

She wiped the drink stains off with a tissue. She sat down to relieve herself and swung her legs. She pictured soldiers whose legs were blown off in land-mines. Imagine what it must be like to not be able to get off the toilet seat by oneself. Her legs were shaking. She headed back.

The Café had a red stone tiled path through a white pebbled courtyard leading up to the seating area. Sunlight

dabbled through the huge skylights on the Dragon Tree and Elephant Ear plants making camouflage patterns. What if there was nothing except the path and the rest of the floor was a minefield? Shaurya and her were once on a rope bridge, he slipped and dangled for a while before he pulled himself up. Above raging white waters and a steep gorge of no return. She stopped to steady herself. Her stilettos tethering on the edge.

She sat down at the table. A group of college students had come in and were making a lot of noise.

"Kids are so much trouble even when they grow up. But we're definitely going to have one or two..."she heard the clinking of glasses.

They were cheering and celebrating something.They popped a bottle of Champagne. The cork came flying, whizzing like a bullet past her, she ducked.

"Hope you're not hurt?" She looked up but Shaurya was gone.

"Where did he disappear?" Her eyes questioned the waiter. "He didn't even touch his meal."

"I'm sorry Ma'am you came here alone."

"Didn't you see my fiancé sitting with me? Why else would I order two drinks?

"Nope, there was no one with you."

"Why is it so warm in here?" She was sweating despite the AC, so were the Mojitos.

Her eyes started to tear up. She reached for the napkin on Shaurya's side. She could smell his aftershave on it. Her love for him was the ultimate magnifying glass and made her senses ten-fold strong. She started weeping bitterly.

The man in the waiter's dress took off his bow tie and picked up his lab coat. He opened his medical file -

Flight Lieutenant Shivali Kaul,

Shrapnel injury - Knee, severe delu-

sions & PTSD.

He jotted down under it -

No sign of improvement in real life stimulus.

The students were silent now, looking sheepishly at them and apologising.

He whispered,

"She hardly sleeps, she's alive but like a living corpse that can't even mourn.Shivali had insisted on going back to pick up Shaurya. He died in her arms; cerebrospinal fluid leaked all over her uniform…"

He glanced at a photocopy in the file -

Capt. Shaurya Singh, Param Vir Chakra (posthumous)

Gunshot wound – temporal lobe. Haemorrhaging. DOA.

"Ma'am,please try to remember..." He sighed.

She clutched his cold Medal to her warm bosom,

"Shaurya promised to meet me here after the war. He's gone to fetch the ring. We're going to have a dream wedding by the beach and honeymoon in Kashmir. See there he comes now! The war hasn't changed anything.

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

Medical

Career options or courses after 12th in medical field is one of the most asked queries among the students. The medical field is one of the respectable, challenging, responsible, top paid and highly job-oriented fields in India. Often, the main motive of most of the students behind choosing Biology after 10th standard is to become a well qualified Doctor; but this field offers a vast number of career opportunities other than MBBS Doctor. The major working areas in the medical fields are healthcare industries, pharmaceutical industries, hospitals and research laboratories.

MBBS

MBBS (Bachelor of Medicine, Bachelor of Surgery) is the most popular and designated degree of doctors. The doctor is also treated like a God or life-saver in India; hence it is one of the most respectable professions in India. It is the only bachelor degree that makes the students eligible to carry the term "doctor" with their name. This field is always been an evergreen field in medical history. In this course, the students are taught about the human anatomy, human cytology, medicine, chemistry, pharmaceutical chemistry, drugs formulation and effect and method of surgery.

Course Type:	Degree
Duration:	5.5 Years
Salary:	around 4-8 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest:	Science
12th Stream:	Physics, Chemistry, Biology

BDS

BDS (Bachelor of Dental Surgery) is the only educational and professional programme for dental surgery. The BDS degree is equivalent to an MBBS degree but works in a different domain. In medical educational field, this is the second choice of the students after the MBBS course. In this course, the students are taught about the denture, dental problems and dental surgery. It is also a good job oriented degree and vast jobs options are available in hospitals, pharmaceutical and medical device manufacturing industries.

Course Type:	Degree
Duration:	5 Years
Salary:	around 4-7 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest:	Science
12th Stream:	Physics, Chemistry, Biology

BAMS

BAMS (Bachelor of Ayurvedic

Medicine and Surgery) is the doctoral degree and can be done after the 12th Science (Biology). It is the bachelor degree in Ayurveda. It is also one of the sought courses after 12th among the science students having biology. It is equivalent to the MBBS degree programme. Ayurvedic medical treatment is growing in India. There is a heavy demand for ayurvedic graduates in hospitals and in ayurvedic pharmaceutical industries.

Course Type: Degree
Duration: 5.5 Years
Salary: around 4-6 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Science & Ayurveda
12th Stream: Physics, Chemistry, Biology

BHMS

BHMS (Bachelor of Homeopathic Medicine and Surgery) is the doctoral degree and can be done after 12th Science (Biology). It is the bachelor

degree in Homeopathy. Beside MBBS and BAMS, it is also one of the popular courses after 12th. It is equivalent to the BAMS degree programme. Homeopathic treatment is one the oldest treatments adopted from ancient times. There is a heavy demand of homeopathy graduates in hospitals and homeopathic pharmaceutical industries like SBL, Schwabe, etc.

Course Type: Degree
Duration: 5.5 Years
Salary: around 4-6 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Science & Homeopathy
12th Stream: Physics, Chemistry, Biology

BUMS

The science (biology) students who are interested in Unani Medical Science can go for BUMS (Bachelor of Unani Medicine and Surgery) course after 12th. It is the bachelor degree. Unani medical treatment is one of the ancient medical treatments. Beside, BHMS and BAMS; it is also one of the reputed medical field after 12th and equivalent to the BAMS degree programme. There is a heavy demand of Unani graduates in hospitals and in homeopathic pharmaceutical industries like Hamdard, Charak etc. for this course Urdu is compulsory up to class 10th.

Course Type: Degree
Duration: 5.5 Years
Salary: around 3-5 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Science, Unani Medicine
12th Stream: Physics, Chemistry, Biology

Nursing

The main motive of this educational programme is to produce the qualified and expert nursing professionals. Nurses are the members of the health care team. In this programme, the students are taught about the nursing and cure methods and techniques. After the completion of this course the candidates are free to work with hospital and healthcare organizations.

Course Type: Degree
Duration: 4 Years
Salary: around 2-3 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Science, Medical care
12th Stream: Physics, Chemistry, Biology

Physiotherapy

Physiotherapy is the therapy that helps to rehabilitate temporary disabled people. It is a non-medicine or surgery therapy. The concept of physiotherapy is to recover the temporary disability by physical exercise. It is a good job oriented professional field. You can go for a job in hospitals or can do private practice.

Course Type: Degree
Duration: 4.5 Years
Salary: around 3-4 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Science, Medical care
12th Stream: Physics, Chemistry, Biology

Occupational Therapy

Occupational Therapy is the therapy that helps to rehabilitate emotionally and physically challenged people. This therapy helps to make life easier

for such people. It is also a non-medicine or surgery therapy. The concept of the Occupational Therapy is to recover emotional and physical disability by counselling and some practices. It is a good job oriented professional field. You can go for a job in hospitals or can do private practice.

Course Type:	Degree
Duration:	3 Years
Salary:	around 3-4 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest:	Science, Medical care
12th Stream:	Physics, Chemistry, Biology

Medical Lab Technician

In every science and medical field, there exists a lab. The career options

or courses after 12th in medical lab technology are huge and provides ample job opportunities to the candidates having appropriate diploma/degree course in this field. In this course the students are taught about the analysis of medical test, microbiology, instrumentation and many other areas related to the medical field.

Course Type:	Diploma/Degree
Duration:	1 Year/3 Years
Salary:	around 1.5-2.5 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest:	Analysis
12th Stream:	Physics, Chemistry, Biology

Science

The students having science group in 12th standard have a choice of a wide range of courses. The biggest advantage of science students is that, they can go for any field of their choice. The most popular career fields for the science students have already been mentioned above, but here we are also listing some other popular fields for science students.

B.Sc, B.Sc (Hons)

The students who wish to continue

with the traditional science field can go for the B.Sc or B.Sc (Hons) degree after 12th (Science). Once you have done your graduation, you may choose a career in scientific research, banking, teaching, as a chemist, analyst, biologist, zoologist and in management. After the completion of this course, there are various job opportunities in both private and government sectors.

Course Type:	Degree
Duration:	3 Years
Salary:	around 2-3 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest:	Science
12th Stream:	Physics, Chemistry, Mathematics/ Biology

Pharmacy

Pharmacy is one of the most popular courses after 12th science. There is a heavy requirement of well-qualified pharmacists in our hospitals, colleges and pharmaceutical industries. This programme has maximum job surety rather than others. This course involves subjects like chemistry, pharmaceutical chemistry, drugs indication and contraindication, chemical structure, new drugs development, formulations, analysis of chemical and drugs, handling and calibration of the instruments uses in pharmacy and research and development.

Course Type:	Diploma/Degree
Duration:	2 Years/3 Years
Salary:	around 2.5-3.5 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest:	Science & Pharmacy
12th Stream:	Physics, Chemistry, Biology

Naturopathy & Yogic Science

Naturopathy & Yogic Science is one of the trusted fields after Allopathy in India. It is the oldest method for cure and prevention of diseases in the world. At present, it is not only popular in India but also growing rapidly across the world. The degree in Naturopathy and Yogic Science is an approved educa-

tional programme in India. Its study involves the use of medical treatment by using natural substances and herbal medicines.

Course Type: Degree
Duration: 4 Years
Salary: around 3-3.5 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Nature science
12th Stream: Physics, Chemistry, Biology

Dairy Technology

Dairy Technology is the separate branch after 12th science. It is a big field of educational study. It covers the technology that is used in the production, manufacturing, quality analysis, and research of dairy products. A graduate in dairy technology has the opportunity to work in dairy industries like Amul, Parag, Param, Mother Dairy and other food industries. The other advantage of this course is that, it helps an individual in establishing his own business.

Course Type: Degree
Duration: 3 years
Salary: around 2.5-3.5 lakh per annum (for fresher)
Career Interest: Science
12th Stream: Physics, Chemistry, Biology

Biotechnology

Biotechnology is the emerging field of science. It is one of the rapidly growing fields that uses both biology and technology to develop the highly advanced medical products like drugs, medicines and medical devices. It is the technical and biological combined process to understand, develop, diagnose and research diseases and medicines. It is a respectable and responsible job oriented field. Ones can go for the food and beverages industries, animal husbandry and agriculture industries after the completion of the course.

Course Type: Degree
Duration: 3 Years
Salary: around 2.5-4 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Science
12th Stream: Physics, Chemistry, Biology

BCA

BCA (Bachelor of Computer Application) is one of the popular degrees in computer application. It helps in understanding the basics of computer programming, networking and database. It is the gateway for the top job oriented MCA degree programme. The students are taught about the computer and computational process through this course. After the completion of this course you can go for IT industries, application development industries and software development companies.

Course Type: Degree
Duration: 3 Years
Salary: around 1.8-2.5 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Computer
12th Stream: Science

https://www.sarvgyan.com/courses-after-12th

Amazing Facts

1. **During World War II, Kit Kat was unavailable due to milk shortages, so the chocolate bar was made without milk.**
2. Thirteen percent of the human population reside in deserts.
3. There are more chickens than people in the world.
4. In 1958, the Crayola crayon color "Prussian Blue" was changed to "Midnight Blue" by the request of teachers as kids could not relate to Prussian history.
5. Wild turkeys can run at speeds of up to 25 miles per hour.
6. Hair and fingernails are made from the same substance, keratin.
7. The Super Bowl is broadcast to over 182 countries in the world.
8. In 1884, Dr. Hervey D. Thatcher invented the milk bottle.
9. Some Ribbon worm will eat themselves if they cannot find food. This type of worm can still survive after eating up to 95% of its body weight.
10. The only 15 letter word that can be spelled without repeating a letter is "uncopyrightable."
11. Singer Chaka Khan came out with a line of chocolates called "Chakalates."
12. The Hawaiian alphabet only has 12 letters.
13. Tycho Brahe, a 16th century astronomer, lost his nose in a duel with one of his students over a mathematical computation. He wore a silver replacement nose for the rest of his life.
14. Each year the Pentagon estimates their computer network is hacked about 250,000 times annually.
15. The first president to ride in an airplane was Franklin Roosevelt.
16. The airplane Buddy Holly died in was the "American Pie." (Thus the name of the Don McLean song.)
17. A tree in metropolitan area will survive for approximately eight years.
18. The only flying saucer launch pad in the world is located in St. Paul, Alberta, Canada.
19. The sex of a baby crocodile is determined by the temperature in the nest and how deeply the eggs are buried.
20. Children laugh about 400 times a day, while adults laugh on average only 15 times a day.
21. The first formal rules for playing the sport of baseball required the winning team to score 21 runs.
22. The University of Plymouth was the first university to offer a degree in surfing.
23. Hens will produce larger eggs as they grow older.
24. In Quebec, Canada, an old law states that margarine must be a different colour than butter.
25. In the United States, about 33% of land is covered by forests.
26. Lemons contain more sugar than strawberries.
27. Peaches were once known as Persian apples.
28. Ninety-five percent of tropical fish sold in North America originate from Florida.
29. The blackberry bush is also called the "bramble."
30. The city of Tokyo was originally called Edo.
31. The sun shrinks five feet every hour.

https://greatfacts.com/

1. The president of which Asian country resides traditionally in the Blue House ? **South Korea**
2. Definitely Maybe was the debut album from which Britpop band of the 1990s and early 2000s? **Oasis**
3. In 1957, how many countries agreed to form the European Economic Community (EEC); the direct precursor to the modern European Union? **6**
4. HAL 9000 is the computerised antagonist of which groundbreaking Stanley Kubrick film of 1968? **2001: A Space Odyssey**
5. Which pioneering aviatrix disappeared during a circumnavigation of the world, over the Pacific Ocean in July 1937? **Amelia Earhart**
6. The Monotremes (or egg-laying mammals) consist of 4 Echidna species and 1 species of which other strange Australian animal? **Platypus**
7. By the number of native speakers, which is the second most widely-spoken language in the world?

Spanish

8. As of 2019, which is the only city to have hosted 3 modern Summer Olympic games? **London**
9. In 1947, which American Air Force officer became the first recorded person to exceed the sound barrier in level flight? **Chuck Yeager**
10. In 1804, Toussaint Louverture led the only successful slave rebelling against colonial powers to found which Caribbean nation? **Haiti**
11. Tyrion Lannister and Ned Stark are characters from which blockbusting HBO fantasy drama series? **Game of Thrones**
12. Which mythical hero's labours included slaying the Nemean Lion, stealing the apples of the Hesperides, and cleaning the Augean stables in a single day? **Heracles/Hercules**
13. How many time zones are recognised in China, the 3rd largest country in the world? **1**
14. The Keirin and the Omnium are competitions in which Olympic sport? **Track Cycling**

15. Which singer, songwriter, and pianist, who reached peak popularity in the 1970s and 1980s, was born Reginald Kenneth Dwight in North London in 1947? **Sir Elton John**
16. Which South American country's official name is The Plurinational State of? **Bolivia**
17. Who, in 2010, became the first female to win the Best Director Academy Award for her war drama The Hurt Locker? **Kathryn Bigelow**
18. In local legend, which figure of Greek mythology is credited as having founded the city of Lisbon? **Odysseus/Ulysses**
19. Which major waterfalls on the Zambezi River lies at the border of Zimbabwe and Zambia? **Victoria Falls**
20. The Dardanelles and the Bosphorus are two of the shortest sea crossings between which 2 of the world's continents? **Asia and Europe**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-455-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर नमस्कार।

सर्वप्रथम शिक्षा सारथी के समस्त सम्पादन मण्डल को नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। शिक्षासारथी का बहु प्रतीक्षित अंक दिसम्बर माह के मध्य में पढ़ने को मिला। इस अंक में शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा चलाए जा रहे वृहत 'पर्यवेक्षण-कार्यक्रम' की झलकियाँ एवं समस्त रूपरेखा पढ़ने का अवसर मिला। संपादक की कलम से पर्यवेक्षण से सुधर रहा है शिक्षण-अधिगम का स्तर मन को उत्साहित करने वाला है। इसके अतिरिक्त डॉ. प्रदीप राठौर जी के समस्त लेख प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। मेरा यह मानना है कि माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह जी के कुशल नेतृत्व में संचालित यह 'पर्यवेक्षण-कार्यक्रम एक मील का पत्थर सिद्ध होगा। इस कार्यक्रम के द्वारा शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों को विद्यार्थियों के बीच पाकर अध्यापकों व विद्यालय प्रबन्धन को भी एक नया अनुभव होगा। इसके साथ-साथ उपस्थित अधिकारीगण विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर एवं अन्य सुविधाओं तथा समस्याओं के बारे में भी रूबरू हो सकेंगे। अतः यह पर्यवेक्षण-कार्यक्रम शिक्षा स्तर को परखने की दिशा में उठाया गया एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इसके अतिरिक्त तकनीकी ज्ञान के अंतर्गत 'ड्रोन बना कर नई उड़ान भर रहे हैं स्कूली विद्यार्थी' ज्ञानवर्धक लेख है। बच्चों के लिए जो स्कूल स्वास्थ्य योजना सेहत लॉन्च की गई है इसके बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त हुई। पत्रिका के सभी लेख ज्ञानवर्धक हैं। 'शिक्षा सारथी' के समस्त सम्पादन मण्डल को एक ज्ञानवर्धक अंक पाठकों तक पहुँचाने के लिए हृदय तल से आभार।

पवन कुमार स्वामी
प्राथमिक अध्यापक
रामॉसंप्रा वि.चुंगी नंबर- 7 लोहारू, भिवानी, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर नमन।

शिक्षा सारथी पत्रिका का नवंबर-दिसंबर अंक संयुक्तांक पीडीएफ रूप में अवलोकनार्थ प्राप्त हुआ। पर्यवेक्षण विषय पर केंद्रित संपादकीय संदेशप्रद है। आलेख पर्यवेक्षण से शिक्षा में सुधार, शैक्षिक पर्यवेक्षण, सेहत, खेल खेल में विज्ञान, वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोण के साथ अंग्रेज़ी प्रभाग की विषय वस्तु रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगी। कविता जी, अनिता बिष्ट तथा कोमल की कविताएँ भावपूर्ण तथा प्रेरक रहीं। पत्रिका का यह अंक शैक्षिक वर्ग तथा शिक्षार्थियों के लिए सर्वथा स्वागतयोग्य है। कुशल संपादन हेतु साधुवाद। सादर।

शैक्षिक वर्ग के लिए सारथी, बनी है शिक्षा सारथी।
अभिसिंचित करती हृदयों को, ज्ञान - विज्ञान भागीरथी।
विशिष्ट पत्रिका ने, ऊँचा कर दिया नाम हरियाणा का,
नियमित पढ़ने वाले पाठक, कहलाएँगे महारथी।

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ- 226022

भारत की पहचान सुभाष

थे हिन्द फ़ौज की जान सुभाष।
जंगे आजादी की शान सुभाष।।

हमें जय हिंद का नारा देकर,
कर गए जान कुर्बान सुभाष।

रग-रग में रमी थी देशभक्ति,
थे जनशक्ति की आन सुभाष।

इंकलाब की आग जलाकर,
हो गए अंतर्धान सुभाष।

जन-जन जिसको याद करें,
हुआ देश पर बलिदान सुभाष।

आन, बान और शान सुभाष,
है भारत की पहचान सुभाष।

शत-शत करता नमन भारती,
रहे दिलों के दरम्यान सुभाष।

- भूपसिंह भारती
प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान,
रावमा विद्यालय पटीकरा
नारनौल, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

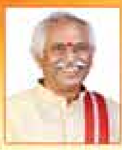

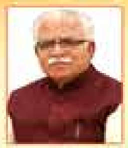

हरियाणा सरकार

2023

अंत्योदय आरोग्य वर्ष

जनवरी (पौष–माघ)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

फरवरी (माघ–फाल्गुन)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28				

मार्च (फाल्गुन–चैत्र)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

अप्रैल (चैत्र – वैशाख)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

मई (वैशाख–ज्येष्ठ)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

जून (ज्येष्ठ–आषाढ़)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

जुलाई (आषाढ़–श्रावण)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

अगस्त (श्रावण–भाद्रपद)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

सितम्बर (भाद्रपद–आश्विन)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

अक्तूबर (आश्विन–कार्तिक)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

नवम्बर (कार्तिक–मार्गशीर्ष)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

दिसम्बर (मार्गशीर्ष–पौष)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

अवकाश सूची

[illegible]